खण्ड-232, अंक-1
सोमवार, 8 श्रावण, शक संवत् 1884
(30 जुलाई, 1962 ई0)

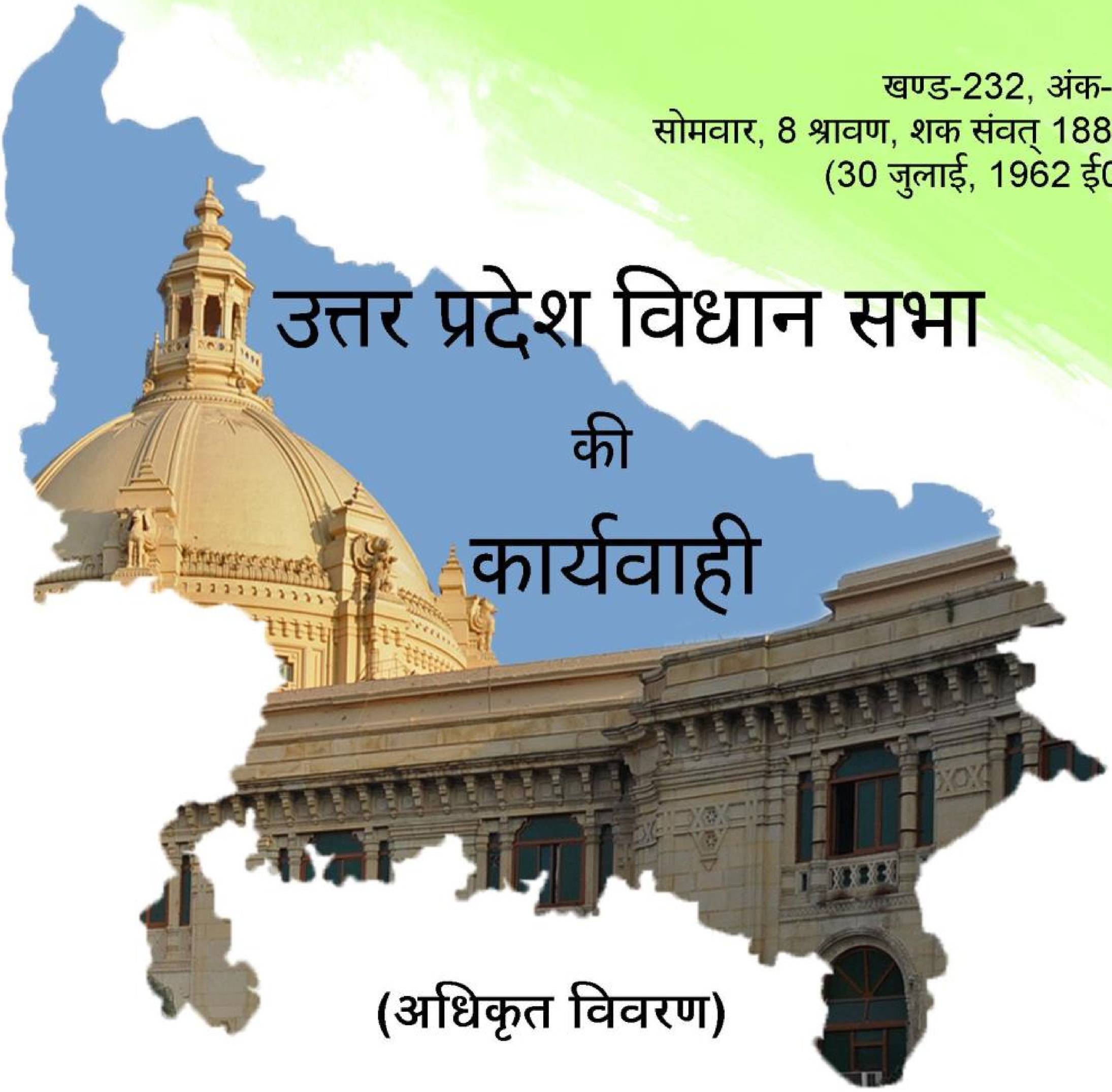

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 232 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:
निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ , उत्तर प्रदेश (भारत)
१९६२

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |
वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

RA 3073
LIBRARY 13223

उत्तर प्रदेश विधान सभा

सोमवार, ३० जुलाई, १९६२

विधान सभा की बैठक सभा-मण्डप, लखनऊ में ११ बजे दिन में अध्यक्ष, श्री मदनमोहन वर्मा, की अध्यक्षता में आरम्भ हुई।

उपस्थित सदस्य—३९५

अखण्डप्रतापसिंह, श्री
अच्छैबरसिंह, श्री
अजीज इमाम, श्री
अनीसुर्रहमान, श्री
अब्दुल समी, श्री
अब्दुल हसीब खां, श्री
अमजद अली, श्री
अयोध्याप्रसाद, श्री
अली जहीर, श्री सैयद
अवधनारायणप्रतापसिंह, श्री
अवधेशकुमार सिनहा, श्री
अवधेशप्रताप, श्री राजा
अवेद्यनाथ, श्री
अशरफ अली खां, श्री
अष्टभुजा, श्री
अहमद बख्श, श्री
इन्द्रपाल, श्री
इन्द्रासन, श्री
इरतजा हुसैन, श्री
ईश्वरशरण, श्री
उग्रसेन, श्री
उमादत्त, श्री
उमाशंकर, श्री (आजमगढ़)
उमाशंकर, श्री (वाराणसी)
उल्फतसिंह, श्री
ऊदल, श्री
ऋषिनारायण शास्त्री, श्री
एस० जी० दत्त, श्री
ए० सी० ग्राइस, श्री
कंधईलाल, श्री
कन्हैयालाल, श्री
कमलासिंह यादव, श्री
कलारानी, श्रीमती
कल्पनाथसिंह, श्री
कल्याणचन्द मोहिले, श्री (उपनाम छुन्नन गुरु)
कल्याणराय, श्री
काशीनाथ, श्री
काशीनाथबहादुर, श्री
काशीप्रसाद द्विवेदी, श्री
किशोरीलाल अग्रवाल, श्री
किश्वर आरा, बेगम
किसुना, श्री
कृष्णचन्द, श्री
कृष्णपालसिंह, श्री
कृष्णानन्द राय, श्री
केदारनाथ, श्री
केशभान, श्री
केशव गुप्त, श्री
केशवराम, श्री
केशवसिंह, श्री
केसरीप्रसाद, श्री
कैलाश, श्री
कोतवालसिंह भदौरिया, श्री
खुशीराम, श्री
खूबसिंह, श्री
खेमचन्द, श्री
गंगाधर, श्री
गंगाप्रसाद, श्री (एटा)
गंगाप्रसाद, श्री (गोंडा)
गंगाप्रसादसिंह, श्री
गंगासिंह, श्री
गणेशचन्द, श्री
गणेशप्रसाद, श्री
गयाप्रसाद, श्री
गयाप्रसाद मेहरोत्रा, श्री
गिरजाप्रसाद, श्री
गिरधारीलाल, श्री (बिजनौर)
गिरवरप्रसाद, श्री
गुप्तारसिंह, श्री
गेंदादेवी, श्रीमती
गेंदासिंह, श्री
गोकुलप्रसाद, श्री

गोपीनाथ दीक्षित, श्री
घनश्यामदास, श्री
घासीराम, श्री
चतुर्भुज शर्मा, श्री
चन्दनसिंह, श्री
चन्द्रजीत, श्री
चन्द्रदेव, श्री
चन्द्रपाल, श्री
चन्द्रबली, श्री
चन्द्रभानु गुप्त, श्री
चन्द्रसिंह, श्री
चम्पावती, श्रीमती
चरणसिंह, श्री
चिरंजीलाल, श्री
चुन्नीलाल, श्री
छांगुर, श्री
छेदालाल चौधरी, श्री
जगदम्बाप्रसाद, श्री
जगदीश, श्री
जगदीशनारायण सिनहा, श्री
जगदीशप्रसाद, श्री (बहराइच)
जगदीशप्रसाद, श्री (मुरादाबाद)
जगदीशशरण अग्रवाल, श्री
जगदीशशरण रस्तोगी, श्री
जगनप्रसाद, श्री
जगन्नाथ, श्री
जगन्नाथ चौधरी, श्री
जगन्नाथसिंह, श्री
जगमोहनसिंह नेगी, श्री
जमादारसिंह, श्री
जमीलुर्रहमान किदवाई, श्री
जयगोपाल, श्री
जयराम वर्मा, श्री
जलील अब्बासी, श्री काजी
जसरामसिंह, श्री
जियाउर्रहमान, श्री उपनाम (बक्कन)
जुगलकिशोर, श्री
जुगलकिशोर, आचार्य
जे० पी० मिश्र, श्री
ज्वालाप्रसाद, श्री
झारखंडेराय, श्री
झिलमिट राम, श्री
टम्प्रेश्वरीप्रसाद, श्री
डल्लाराम, श्री
डूंगरसिंह, श्री
तारा अग्रवाल, श्रीमती
तेजनारायण त्रिवेदी, श्री
तेजभानसिंह, कुंवर
तेजसिंह, श्री
त्रेपनसिंह, श्री
दयाराम, श्री
दलजीतसिंह, श्री
दाऊदयाल खन्ना, श्री
दीनदयाल, श्री
दीपनारायणसिंह, श्री
दुर्गाप्रसाद, श्री
दुर्योधन, श्री
देवदत्त, श्री
देवीदत्त, श्री
देवेन्द्रसिंह, श्री
दौलतलाल, श्री
द्वारकाप्रसाद पांडेय, श्री
द्विजेन्द्रनारायण, श्री
धर्मदत्त वैद्य, श्री
धर्मसिंह, श्री
धूमप्रसाद, श्री
नत्थाराम रावत, श्री
नन्दकुमारदेव वाशिष्ठ, श्री
नरसिंहनारायण, श्री
नरेन्द्रबहादुरसिंह, श्री
नरेन्द्रसिंह, श्री (पिथौरागढ़)
नरोत्तमसिंह, श्री
नौरंगसिंह, श्री
नवलकिशोर, श्री
नाथूराम शिक्षक, श्री
नित्यानन्द पाण्डेय, श्री
नियाज हसन खान, श्री
नियामतुल्ला अन्सारी, श्री
नेकराम शर्मा, श्री
नैनसिंह, श्री
नौनिहालसिंह चौधरी, श्री
नौरंगलाल, श्री
पंचम, श्री
परमाई, श्री
पशुपतिनाथसरनसिंह, श्री
पितई, श्री
पीतमसिंह, श्री
पुरुषोत्तमलाल बधवार, श्री (राजाजी)
पूरनलाल, श्री
प्रकाशवती सूद, श्रीमती
प्रेमसिंह, श्री
प्रेम सुन्दर, श्री
फूलसिंह, श्री
बंकटासिंह, श्री (टुन्नूसिंह)
बंशीधर पांडेय, श्री
बंशीधर मिश्र, श्री

उत्तर प्रदेश विधान सभा

बंशीलाल, श्री
बद्रीप्रसाद पालीवाल, श्री
बद्रीप्रसाद, श्री
बनवारीलाल विप्र, श्री
बनारसीदास, श्री
बब्बनसिंह, श्री
बलदेवसिंह, सरदार
बलदेवसिंह आर्य, श्री
बलवानसिंह, श्री
बलवीरसिंह, श्री
बसंतलाल, श्री
बसंतलाल शर्मा, श्री
बसंतसिंह, श्री
बांकेलाल, श्री
बाबूलाल, श्री
बाबूसिंह, श्री
बालकराम वैश्य, श्री
बालेन्द्रभूषणप्रतापसिंह, श्री
बालोजी अग्रवाल, श्री
बिपिनबिहारी तिवारी, श्री
बिशनलाल, श्री
बृजबिहारी, श्री
बृजभूषणशरण, श्री
बृजमोहनलाल गुप्त, श्री
बृजराजसिंह, श्री
बृजरानी, श्रीमती
बृजेश्वर सहाय, श्री
बेचनराम, श्री
बेदराम, श्री
बेनीबाई, श्रीमती
बैजनाथसिंह वैद्य, श्री
बैजूराम, श्री
ब्रह्मदत्त मायर, श्री
भगवानदास, श्री
भगवानदास यादवेन्दु, श्री
भगवानदीन, श्री
भगवानसहाय, श्री
भगौतीदीन, श्री
भानुप्रतापसिंह, श्री
भीखालाल, श्री
भीमाप्रसाद, श्री
मंगल, श्री (बहराइच)
मंगलदेव, श्री
मतोलासिंह, श्री
मदनपालसिंह, श्री
मन्नालाल, श्री
महमूद अली खां, श्री
महमद हसन खां, श्री
महरामसिंह, श्री
महादेव, श्री
महावीरप्रसाद, श्री
महावीरप्रसाद श्रीवास्तव, श्री
महावीरसिंह, श्री
महेन्द्रसिंह, श्री
महेशसिंह, श्री
माताप्रसाद, श्री
माधोप्रसाद त्रिपाठी, श्री
मान्धातासिंह, श्री
मुकन्दीलाल बैरिस्टर, श्री
मुकुटबिहारीलाल, श्री
मुजफ्फर हसन, श्री
मुन्नूसिंह, श्री
मुमताज मुहम्मद खां, श्री
मुरलीधर कुरील, श्री
मुलतानसिंह, श्री
मुहम्मदहुसैन, श्री
मूलचन्द शास्त्री, श्री
मेघनाथसिंह शिशोदिया, श्री
मेवालाल, श्री
मेड़ीलाल, श्री
मैनेजर, श्री
मोहनलाल, श्री
मोहनलाल अहिरवार, श्री
मोहनलाल, आचार्य
मोहनसिंह, श्री
यशपाल, श्री
यशोदादेवी, श्रीमती
यादवेन्द्रसिंह, श्री (लल्लन जी)
योगेश्वरप्रसाद खंडूड़ी, श्री
रक्षपालसिंह, श्री
रघुनाथ, श्री
रघुनाथप्रसाद, श्री
रघुनाथसिंह, श्री
रघुवीर, श्री
रघुवीर सहाय, श्री
रघुवीरसिंह, श्री
रतीपाल, श्री
रणबहादुरसिंह, श्री
रफी खां, श्री
रमाकांतसिंह, श्री
रमेशचन्द्र शर्मा, श्री
राघवेन्द्रप्रतापसिंह, श्री
राजदेव, श्री
राजनाथ, श्री
राजनारायण, श्री (मिर्जापुर)
राजनारायण, श्री (वाराणसी)

राजनारायण मिश्र, श्री
राजाराम, श्री
राजेन्द्रकिशोरी, श्रीमती
राजेन्द्रकुमारी बाजपेयी, डाक्टर
राजेन्द्रसिंह, श्री
राजेन्द्रसिंह यादव, श्री
राधेश्याम, श्री
रामअधार कनौजिया, श्री
रामअधीनसिंह, श्री
रामअनन्त पांडेय, श्री
रामअवध, श्री
रामआसरे, श्री
रामकिंकर, श्री
रामकिशोर, श्री (फतेहपुर)
रामकिशोर, श्री (बाराबंकी)
रामकुमार शास्त्री, श्री
रामचन्द्र विकल, श्री
रामचन्द्रसिंह, श्री
रामचरणशाह, श्री
रामजीलाल सहायक, श्री
रामनाथ पाठक, श्री
रामपाल त्रिवेदी, श्री
रामपालसिंह, श्री
रामप्यारे, श्री
रामबली, श्री
रामभजन, श्री
राममूर्ति 'अंचल', श्री
रामरती, श्रीमती
रामरूपसिंह, श्री
रामलखन, श्री
रामलखनसिंह, श्री
रामलाल, श्री
रामशंकर रविवासी, श्री
रामसमझावन, श्री
रामसिंह, श्री (मैनपुरी)
रामसिंह, श्री (सहारनपुर)
रामसुन्दर, श्री
रामसुन्दर शास्त्री, श्री
रामसूरतप्रसाद, श्री
रामस्वरूप, श्री
रामायण, श्री
रामेश्वरनाथ, श्री (उपनाम चौबे)
रियासत हुसैन, श्री
रुकुमसिंह राठौर, कुंवर
रुद्रप्रतापसिंह, श्री कुंवर
लक्ष्मीशंकर यादव, श्री
लखपतराम शर्मा, श्री
लखीसिंह, श्री
लालबहादुरसिंह, श्री (जौनपुर)
लालबहादुरसिंह, श्री (वाराणसी)
लोकपालसिंह, श्री
वशिष्ठनारायण शर्मा, श्री
विचित्रनारायण शर्मा, श्री
विजयकुमार, श्री
विजयपालसिंह, श्री
विजयशंकरसिंह, श्री
विजयसिंह, श्री
विद्यावती, श्रीमती
विनयलक्ष्मी सुमन, श्रीमती
विश्वनाथ पांडेय 'प्रणव', श्री
विश्वनाथप्रसाद, श्री
विष्णुप्रतापसिंह, श्री
वीरसेन, श्री
वैजनाथ पांडेय, श्री
शंकरलाल, श्री
शकुन्तलादेवी, श्रीमती
शराफत हुसैन रिजवी, श्री
शशिभूषणसिंह, श्री
शांतिचन्द, श्री
शारदानन्द, श्री
शारदाभक्तसिंह, श्री
शिवचरण, श्री
शिवनाथसिंह, श्री
शिवप्रसाद, श्री
शिवमंगल, श्री
शिवमूर्ति, श्री
शिवसम्पति शर्मा, श्री
शिवेन्द्रप्रताप, श्री
शीतलप्रसाद, श्री
शुगनचन्द मजदूर, श्री
शौकत हमीद खां, श्री
श्यामलाल, श्री
श्यामसुन्दर, श्री
श्रद्धादेवी, कुमारी
श्रीनिवास, श्री
श्रीपत मिश्र, श्री
श्रीपाल, कुंवर
श्रीराम तिवारी, श्री
श्रीराम, श्री
सईद अहमद, श्री
सत्यदेव, श्री
सत्यनारायण पांडेय, श्री

सत्यवीर कुंवर, श्री
सन्तसिंह यूसुफ, श्री
सरदारसिंह, श्री
सहदेवसिंह, श्री
सालिग्राम जैसवाल, श्री
सियादुलारी, श्रीमती
सियाराम, श्री
सीताराम, डाक्टर
सुक्खनलाल, श्री
सुखदेवप्रसाद, श्री
सुखरामदास, श्री
सुखलाल, श्री (इटावा)
सुखलाल, श्री (लखनऊ)
सुगनचन्द शर्मा, श्री
सुचेता कृपालानी, श्रीमती
सुदामाप्रसाद गोस्वामी, श्री
सुरजन, श्री
सुरेन्द्रदत्त बाजपेयी, श्री
सूबेदारसिंह, श्री
सूरजपालसिंह, श्री
सूरजलाल, श्री
सुरेन्द्रविक्रम, श्री
सुशीला रोहतगी, श्रीमती
सेवाराम, श्री
सोहनलाल धुसिया, श्री
हमीद खां, श्री
हरिगैनराम, श्री
हरिनाथ तिवारी, श्री
हरीदत्त कांडपाल, श्री
हरीशकुमार गंगवार, श्री
हरीसिंह, श्री
हलीमुद्दीन, श्री
हिम्मतसिंह, श्री
हुकुमसिंह विसेन, श्री
हेतराम, श्री
हेमराज, श्री
हेमवतीनन्दन बहुगुणा, श्री
होतीलाल अग्रवाल, श्री
होरीलाल यादव, श्री

नोटः—वन मंत्री, श्री अलगूराय शास्त्री, नियोजन मंत्री, श्री हरगोविन्दसिंह तथा सिंचाई उपमंत्री, श्री रामनारायण पांडेय भी उपस्थित थे ।

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन तथा पश्चिमी बंगाल के मुख्य मंत्री, श्री विधानचन्द्र राय, के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मंत्री (श्री चन्द्रभानु गुप्त)—अध्यक्ष महोदय, जब हम आखिरी बार यहां से उठ थे और आज जब हम यहां फिर से इकट्ठा हो रहे हैं, इस दरमियान में हमने भारत की दो महान् विभूतियों को अपने बीच से खो दिया—ऐसी विभूतियां जिन्होंने देश के निर्माण में जीवनपर्यन्त परिश्रम किया, ऐसे महान् व्यक्ति जिन्होंने देश को विभिन्न समयों पर ऐसी दिशा में चलने के लिये प्रेरित किया जहां चलकर वह अपने पैरों पर खड़ा होने की क्षमता का अनुभव करने लगा। मेरा तात्पर्य राजर्षि टंडन जी के निधन से है और मेरा तात्पर्य माननीय विधानचन्द्र राय के निधन से है।

राजर्षि टंडन तो हमारे बीच में वर्षों से कार्य करते रहे, हम उनके अधिक नजदीक रहे और इस सदन का बिरला ही कोई व्यक्ति होगा जो उनके नाम से गौरवान्वित न होता होगा, जो उनकी कीर्ति से गौरव प्राप्त करने का अनुभव न करता होगा। राजर्षि टंडन, अध्यक्ष जी, उस आसन को जिस पर आप आज विराजमान हैं कई मर्तबा और कई वर्षों तक सुशोभित करते रहे हैं और उन्होंने इस आसन को जो गौरव प्रदान किया वह भारत के गणतंत्र की परम्परा के इतिहास में सदैव अमर रहेगा। हम उनके उस व्यवहार को

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

[श्री चन्द्रभानु गुप्त]

भूल नहीं सकते, उनकी उन नयी पद्धतियों के रचने की भावनाओं को भूल नहीं सकते जो उन्होंने इस आसन पर बैठकर हमें प्रदान कीं और जिनकी तरफ सारे देश का ध्यान आमंत्रित किया। माननीय अध्यक्ष जी, राजर्षि टंडन जी एक राजनीतिक दल से संबंध रखते थे और जब वह यहां चुनकर आये थे, वह एक राजनीतिक दल के प्रतिनिधि के नाते चुनकर आये थे। जब वह इस आसन पर बैठे तब उन्होंने उस राजनीतिक दल से अन्य देशों की परम्पराओं की भांति अपना संबंध-विच्छेद नहीं किया और विरोधी दलों के कहने पर भी उन्होंने अपना निश्चय नहीं बदला जब यह प्रश्न, कि किसी दल का व्यक्ति अध्यक्ष पद को सुशोभित कर सकता है या नहीं, सदन में उठाया गया और सदन के बाहर उठाया गया तो उन्होंने उस भावना का तीव्र विरोध किया जिस भावना से प्रेरित होकर लोग यह चाहते थे कि वह कांग्रेस जिसके कि प्रतिनिधि बनकर वह इस सदन में आये थे, उससे अपना संबंध छोड़ दें। उन्होंने बराबर इस बात की घोषणा की कि एक व्यक्ति किसी दल से संबंध रखता हुआ भी अध्यक्ष पद पर निष्पक्षता से कार्य कर सकता है और जब उनसे दल छोड़ने की मांग प्रस्तुत की गई तो उन्होंने बराबर यह कहा कि वह दल से संबंध नहीं छोड़ेंगे, परन्तु उस पद पर रहते हुये सदा निष्पक्षता का परिचय देंगे और निष्पक्ष भावना से अपने कर्त्तव्य का पालन करेंगे। उनकी इस नीति का विरोधीदल ने जो उस जमाने में मुस्लिम लीग दल था, विरोध किया था और उस दल ने एक अविश्वास का प्रस्ताव सदन के समक्ष उनके प्रति पेश कर दिया। जब वह प्रस्ताव पेश हुआ तो राजर्षि टंडन ने कड़े शब्दों में इस बात की घोषणा की और यह कहा कि वह उस दल से संबंधित रहते हुये भी अध्यक्ष पद का निष्पक्षता से कार्य कर सकते हैं, परन्तु वह उस पद पर एक मिनट भी रहना पसन्द नहीं करेंगे यदि विरोधी दल के लोग चाहते हैं कि वह उस पद पर न रहें। कांग्रेस का बहुमत था उस जमाने में, जैसा कि सदन का प्रत्येक सदस्य भलीभांति जानता है, परन्तु बहुमत के बल पर वह अध्यक्ष पद पर रहना नहीं चाहते थे। उन्होंने विरोधी दल को चेतावनी दी कि यदि वह वास्तविकता से उन्हें नहीं चाहता है तो उसे सिर्फ यह कह देना ही उन्हें उस पद से हटने के लिये प्रेरित कर देगा और वह उस पद से हट जायेंगे। जब उन्होंने इस प्रकार की घोषणा की तो विरोधीदल अचम्भे में पड़ गया, क्योंकि उसे इस बात का कभी ज्ञान नहीं था कि यह व्यक्ति इस प्रकार से अपने पद से अलग होने के लिये उद्यत है। उस दल ने अपना प्रस्ताव वापस ले लिया और जब तक वह उस पद पर रहे बराबर उन्होंने सत्तारूढ़ दल के सदस्यों के प्रति और विरोधी दल के सदस्यों के प्रति समानता का व्यवहार किया और सदा स्वस्थ पद्धति, मान्यता और परम्पराओं को रचने की चेष्टा की तथा किसी के साथ उन्होंने पक्षपात का कोई व्यवहार नहीं किया। ऐसा व्यक्ति जो इस प्रकार के सिद्धांतों से प्रेरित होकर हमारे बीच में काम करता था, उसने आपके इस पद को अपने कार्यकाल में जो गौरव प्रदान किया, वह जैसा मैंने कहा, देश के इतिहास में सदा आदर एवं सम्मान के साथ देखा जायगा। उनका कार्यकाल इस पद के ऊपर हमारे बीच में उसी तरह से व्यतीत हुआ जिस तरह से स्वर्गीय विट्ठल भाई पटेल का कार्यकाल सेंट्रल असेम्बली की अध्यक्षता के जमाने में व्यतीत हुआ था और जिस कार्यकाल ने उस पद को गौरव प्रदान किया था और जिस कार्यकाल ने उन परम्पराओं को अपने देश में स्थापित किया था जो परम्पराएं गणतंत्र की जड़ मजबूत करती हैं। ऐसा महान् व्यक्ति हमारे बीच से उठ गया।

पूज्य टंडन जी हमारे प्रदेश के उन व्यक्तियों में से थे, जिन्होंने जीवन पर्यन्त इस प्रदेश की और इस देश की सेवा की। हमें वे अवसर नहीं भूले हैं कि जिन अवसरों पर विद्यार्थी जीवन से ही उन्होंने देश के प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित किया और देश की सेवा में अपने को जुटाने के लिये सदैव उद्यत रखा। यदि हम उनके प्रारम्भिक जीवन की तरफ दृष्टिपात करें तो हमें पता चलेगा कि उन्होंने १९०४ या १९०५ में बी० ए० की परीक्षा पास की और फिर १९०६ में शायद वकील भी हुए, परन्तु जब वह बी० ए० या इंटरमीडियेट के विद्यार्थी थे तभी से उन्होंने कांग्रेस के विश्वासों और धारणाओं में हिस्सा लेना प्रारम्भ किया था। १८९९ में, जब कांग्रेस का अधिवेशन लखनऊ में होने को था तब वह एक वालंटियर की हैसियत से उसमें कार्य

करने के लिये आये थे। १९०६ में, ज्योंही वह वकालत पास कर चुके, कलकत्ता के कांग्रेस सेशन में, जिसमें दादा भाई नौरोजी ने अध्यक्ष पद ग्रहण किया था, वह एक डेलीगेट के रूप में गये और जैसा कि हम सब जानते हैं, उसके बाद वह जीवन पर्यन्त कांग्रेस की सेवा में जुटे रहे। १९०८ से १९१४ तक वह वकालत करते रहे। १९१४ में वह हाईकोर्ट में भी वकालत करने लगे, परन्तु थोड़े जमाने के बाद वह इलाहाबाद से नाभा चले गये और उस राज्य में पहले वह कानून के मंत्री बने और बाद में उस छोटे राज्य में विदेशी समस्याओं के सुलझाने वाले मंत्री चुने गये। अपने कार्यकाल में उन्होंने अपने को बहुत जनप्रिय बनाया, परन्तु केवल दो ही वर्ष वह अपने उस पद पर रह सके, क्योंकि १९१६ में जब वह साहित्य सम्मेलन के समारोह में सम्मिलित होने की आज्ञा राजा से चाहते थे तो राजा ने उन्हें वहां जाने से मना कर दिया और इस पर उन्होंने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। फिर १९१६ में वे इलाहाबाद वापस आ गये और हाईकोर्ट में फिर वकालत करने लगे। १९१९ में गांधी जी का आन्दोलन प्रारम्भ हुआ और वे उसमें सम्मिलित हुए। उसमें पकड़े गये, डेढ़ साल की सजा उनको हुई, फिर उस जमाने में जैसा कि हम सब जानते हैं, वह नगरपालिका, इलाहाबाद के अध्यक्ष चुने गये। नगरपालिका के अध्यक्ष के नाते उन्होंने जिस पाबन्दी के साथ काम किया वह भी एक उदाहरण के रूप में हमारे बीच में है। जब वे नगरपालिका के अध्यक्ष थे तो मिलिटरी की अथारिटीज के पास बहुत सा नगरपालिका का रुपया जलकर का बकाया था। बहुत जमाने से लिखा-पढ़ी हो रही थी और मिलिटरी अथारिटीज पैसे नहीं देती थी। हम सब जानते हैं कि उस समय मिलिटरी अथारिटीज किस प्रकार देशवासियों के साथ व्यवहार किया करती थी। उन्हों आदेश दिया कि चूंकि मिलिटरी अथारिटीज हमारा जलकर का बकाया रुपया नहीं अदा कर रही हैं इसलिये उनको पानी देना बन्द कर दिया जाय। उनको पानी देना बन्द कर दिया गया और नतीजा यह हुआ कि शीघ्र ही बकाया रकम नगरपालिका को प्राप्त हुई।

उस समय यह भी घटना वहां घटी कि गवर्नर महोदय का जो राजभवन इलाहाबाद में था, वहां से अधिक जल मांगने की दरख्वास्त अध्यक्ष, नगरपालिका के पास भेजी गयी। उस समय नगर निवासियों को जल का काफी कष्ट था। बस, टंडन जी ने फौरन लिख कर भेज दिया कि नागरिकों को आजकल जल का कष्ट है इसलिये राजभवन के लिये जितना कि जल पहले मिलता था उससे अधिक नहीं मिल सकता। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि टंडन जी उन व्यक्तियों में से थे कि जो बड़े से बड़े व्यक्ति से टक्कर लेने को उद्यत रहते थे। वे निर्भीक थे और जिस चीज को वह ठीक समझते थे उसके लिये प्रत्येक प्रकार की कुर्बानी करने के लिये उद्यत रहते थे। जहां मैंने अभी आपसे अध्यक्ष महोदय, यह निवेदन किया था कि उन्होंने इस पद से हटने की भावना प्रकट की, वहां जब ऐसे-ऐसे अवसर इस महापुरुष के समक्ष आये, उसने उन प्रवृत्तियों का परिचय दिया कि जो प्रवृत्तियां हर एक को प्रेरणा प्रदान कर सकती हैं, हर एक को रास्ता दिखा सकती हैं। हमको आपको और सब को यह अच्छी तरह से और भलीभांति विदित है कि टंडन जी सन् १९३६-३७ में निर्विरोध इलाहाबाद के क्षेत्र से विधान-सभा के सदस्य चुने गये। जैसा कि मैंने अभी बताया कि वे अध्यक्ष १९३७ में चुने गये। सन् १९४६ में फिर वे इलाहाबाद से निर्विरोध सदस्य निर्वाचित हुये तो दोबारा वे स्पीकर पद के लिये सब की राय से चुने गये। १९५० तक वे इस प्रदेश की असेम्बली के स्पीकर रहे और अपने स्पीकर के कार्यकाल में उन्होंने उच्च परम्पराओं के रचने की चेष्टा की और उस दिशा में सदन के सदस्यों को ले जाने के कार्य में अपने को संलग्न किया कि जिस तरफ चल कर सदियों से भूली हुई परम्पराएं हमारे बीच में जागृत हों और गणतंत्र की भावनायें हमारे जन-जीवन में जगह लें।

टंडन जी उत्तर प्रदेशीय कांग्रेस के दो मर्तबा अध्यक्ष हुये, एक बार १९२३ में, दूसरी बार १९४८ में। और वह आल इंडिया कांग्रेस के भी १९५०-५१ में अध्यक्ष निर्वाचित हुये। परन्तु १९५०-५१ में पंडित जवाहरलाल नेहरू से सैद्धांतिक मतभेद होने के कारण उन्होंने उस पद को छोड़ दिया और छोड़कर फिर उसी तरह से, उन्हीं भावनाओं से प्रेरित होकर

[श्री चन्द्रभानु गुप्त]

देश के कार्यों में संलग्न रहे। जब वे कान्स्टीटुएंट असेम्बली के सदस्य थे तो हम में से प्रत्येक यह अच्छी तरह से जानता है कि किस प्रकार से उन्होंने अपने प्रयास से हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा का गौरव प्रदान करने की चेष्टा की और किस तरह से वह अपने इस कार्य में सफल हुये। वे हिन्दी की सेवा तो १९१० से और बराबर जीवन-पर्यन्त करते ही रहे। जो साहित्य सम्मेलन है वह उनके तत्वावधान में उनके मशविरों के साथ वर्षों से अपने प्रदेश में और अपनी शाखाओं के द्वारा देश में कार्य करता रहा। वह संस्था जिसे उन्होंने पाला था और पोसा था, उसे एक कानून के द्वारा पार्लियामेंट ने मान्यता दी और यह हमारे लिये प्रसन्नता की बात है कि वह मान्यता जब तक वह जीवित रहे उनके जीवन के आखिरी हिस्से में उस संस्था को प्राप्त हुई।

टंडन जी उन व्यक्तियों में से थे जिन्होंने सदा जो पददलित रहे हों, जो गरीब रहे हों, जो कमजोर रहे हों, उनकी सेवा की। हम सब को यह भलीभांति विदित है कि किस तरह से उन्होंने १९१८ में किसान-सभा की रचना की और किस तरह से १९३०–३२ में उन्होंने जमींदारी तोड़ने के प्रश्न को कांग्रेस के समक्ष कांग्रेस के कार्यकर्त्ताओं के समक्ष प्रस्तुत किया और किस तरह से समय-समय पर किसानों की समस्याओं को हल करने के लिये उन्होंने विभिन्न प्रकार के आन्दोलनों को चलाने का प्रयास किया। वे गरीबों के, पिछड़ों के और पददलितों के सदा सहायक रहे। यों तो इस प्रदेश ने बहुत से राजनीतिक नेताओं को पैदा किया, जन्म दिया परन्तु टंडन जी उन राजनीतिक नेताओं में से थे जिन्होंने सदा गरीबों की और जो राजनीतिक कार्यकर्त्ता थे उनकी सहायता की। सदा उनको सहायता देकर उस रास्ते पर चलने के लिये प्रेरित किया, जहां कभी-कभी उनकी आर्थिक कमियां उनकी आर्थिक दिक्कतें उन्हें चलने के लिये रुकावट डालती थीं।

टंडन जी ने एक ओर जहां हिन्दी की सेवा की वहां हिन्दी की सेवा इस भावना से नहीं की कि कोई हिन्दी भाषी राज्य की स्थापना सारे देश में हो। यह उनकी महानता का प्रतीक है, वे उन व्यक्तियों में से थे जिनकी यह भावनायें थीं कि हिन्दी के द्वारा देश में एकता रखी जा सकती है और हिन्दी के द्वारा देश को—काश्मीर से केप कमोरीन तक—तथा हर कोने कोने को एक सूत्र में बांधा जा सकता है और इसीलिये उन्होंने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का प्रयास किया। कुछ व्यक्ति उन्हें साम्प्रदायिक समझते थे, क्योंकि वे हिन्दी से प्रेम करते थे। यह हमारा दुर्भाग्य रहा कि जो व्यक्ति मानवता का पुजारी था, जो कबीर का अनुयायी था, जो कबीर की धारणाओं में विश्वास करता था और जो कबीर के ही अनुसार मनुष्य मनुष्य में भेद करना एक दिमाग की खराबी समझता था और इस विश्वास का था कि मनुष्य मनुष्य में कोई भेद नहीं किया जा सकता, उसका टुकड़ा नहीं किया जा सकता, वह व्यक्ति आज हमारे बीच नहीं रहा। टंडन जी, जैसा कि हम आप सभी जानते हैं, उन व्यक्तियों में से रहे जिन्होंने, बावजूद गांधी जी की सिफारिशों के, जब कि देश का बंटवारा हो रहा था, उसका विरोध किया। जब आल इंडिया कांग्रेस कमेटी में बंटवारे का प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ, उन्होंने गांधी जी के विचारों का विरोध किया, अन्य नेताओं का विरोध किया, सरदार पटेल का विरोध किया, जवाहर लाल नेहरू का विरोध किया और अपने स्वतंत्र विचारों को उस अधिवेशन में प्रकट किया। उन्होंने कहा कि बंटवारा हिन्दू और मुसलमानों की समस्या का इलाज नहीं हो सकता और उससे देश की समस्यायें हल्की नहीं होंगी। बावजूद गांधी जी के आग्रह के उन्होंने जब मत देने का प्रस्ताव उपस्थित हुआ तो उसके विरोध में ही अपना मत दिया। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि टंडन जी हमारे देश के उन महापुरुषों में से रहे जिन्होंने जब-जब समय आया स्वतंत्रता पूर्वक अपने विचारों को देशवासियों के समक्ष रखने की चेष्टा की।

यही नहीं, उन्होंने जब लाला लाजपतराय का निधन हो गया तो सर्वेन्ट्स आफ पीपुल सोसाइटी की अध्यक्षता भी की, जिसको कि लाला लाजपतराय ने ही जन्म दिया था और उनकी यह ख्वाहिश थी कि टंडन जी उसके अध्यक्ष बनें। लाला लाजपतराय की आखिरी ख्वाहिश को

रा करने के लिये ही उन्होंने उस सोसाइटी की अध्यक्षता को स्वीकार किया और उसके अध्यक्ष की हैसियत से उन्होंने कितनी सेवा हमारी की, कैसे-कैसे व्यक्तियों को हमारे बीच उत्पन्न किया, उसे कहने की मुझे आवश्यकता नहीं, आप सभी जानते हैं। इस सोसाइटी ने अपने आदर्शों और दृष्टिकोण के अनुसार जिन व्यक्तियों को जन्म दिया वे आज देश के कोने-कोने में बंटे हुये हैं। हमारे राज्यपाल महोदय भी उन्हीं में से हैं, एक हमारे साथी मंत्री हैं जो गृह मंत्री हैं, वे भी उन्हीं लोगों में से हैं। इसकी शाखायें आज जगह-जगह फैली हुई हैं और इस संस्था के सदस्य आज देश की विभिन्न चीजों का नेतृत्व कर रहे हैं। तो एक ऐसी संस्था के अध्यक्ष के नाते उन्होंने सार्वजनिक जीवन में हमारे बीच ऐसे व्यक्तियों को दिया कि जिन्होंने सार्वजनिक जीवन के आदर्शों को देश के अन्दर फैलाने की चेष्टा की। टंडन जी ने जहां किसान की सेवा की, जहां हिन्दी की सेवा की, वहां उन व्यक्तियों की भी सेवा की जिनको कोई पूछता नहीं था, जिनके लिये कोई अच्छे विचार नहीं रखता था। मेरा तात्पर्य उन क्रान्तिकारी लोगों से है, उनके साथियों से है, जो अपने जीवन को संकट में डाल कर अपने विचारों के अनुसार देश की सेवा करना चाहते थे, अंग्रेजी हुकूमत को खत्म करना चाहते थे, टंडन जी ने ऐसे व्यक्तियों को, भले ही उनके विचारों से वे सहमत न रहे हों, उन्हें वह आर्थिक सहायता दी जिससे वे जिन्दा रह सकें, आर्थिक कठिनाइयों से दूर रह सकें। आज ऐसा महापुरुष जिसने उत्तर प्रदेश के सार्वजनिक जीवन में ऊंचे आदर्शों को उठाया, अपने सादे जीवन से कांग्रेसजनों को और सार्वजनिक कार्यकर्ताओं को एक नया नक्शा पेश किया, वह हमारे बीच से हट गया। वे वास्तविक रूप में राजर्षि थे। उनके विचार ऊंचे थे, उनका जीवन सादा था। वह अवश्य हमारी नजरों से ओझल हो गये, लेकिन जो कुछ वह हमारे सार्वजनिक जीवन में हमें दे कर गये हैं और सेवा का मार्ग हमारी नजरों में प्रशस्त कर गये हैं, वह कभी नहीं भुलाया जा सकता, वह सदा अमर रहेगा।

डाक्टर विधानचन्द्र राय हमारे देश की उन विभूतियों में से थे जो बुढ़ापे की उम्र तक देश के कार्य में जुटे रहे और जिस कार्य की अपनी जिम्मेदारी महसूस की उसके सम्पादन में सब कुछ न्यौछावर करने के लिये उद्यत रहे। ७८ या ७९ वर्ष की अवस्था तक कार्य करने की क्षमता रखना बिरले ही व्यक्तियों का काम है, लेकिन वह ऐसे ही व्यक्तियों में से थे। उन्होंने भी डाक्टरी परीक्षा अपने देश में पास करके विदेश में डाक्टरी की परीक्षा पास की और अधिक अनुभव प्राप्त करने के लिये १९०६ में देश से प्रस्थान किया। ४ साल विदेश में रह कर नये-नये स्वास्थ्य विज्ञान के चरणों का अध्ययन किया और १९११ में जब विदेश से लौट कर आये तो उन्होंने अधिक ध्यान, जैसा कि डाक्टर लोग किया करते हैं, प्रैक्टिस की तरफ नहीं दिया, परन्तु आधुनिक विज्ञान की शिक्षा के फैलाने की दिशा में अपने प्रारंभिक जीवन को व्यतीत किया। कलकत्ता विश्व-विद्यालय में उन्होंने वर्षों तक एक शिक्षक के नाते अन्वेषणों के प्रति, अनुसंधानों के प्रति सदा एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया और उसके द्वारा उन्होंने मेडिकल जगत् में ख्याति प्राप्त की। अपने समय के वह एक प्रमुख डाक्टर माने जाते थे और जब जब ऐसा समय आया, जब जब महात्मा गांधी ऐसे महापुरुष को जेल की चहारदीवारियों में रह कर हंगर-स्ट्राइक पर जाना पड़ा, भूख-हड़ताल करनी पड़ी, तब यही डाक्टर थे जो उनके बिस्तरे के नजदीक थे, जो अपने कारोबार को छोड़ कर १९३३ में जब गांधी जी भूख-हड़ताल कर रहे थे उनकी सेवा-शुश्रूषा करने के लिये उनके नजदीक पहुंचे थे।

जहां तक उनके राजनीतिक जीवन का संबंध है, उन्होंने गांधी जी के आन्दोलन के प्रारम्भ होते ही उसमें सम्मिलित होना स्वीकार किया था और जब सी० आर० दास ने स्वराज्य पार्टी की स्थापना बंगाल में की तो ये उसके एक प्रमुख सदस्य बने और उसके नेता सी० आर० दास के नेतृत्व में उनके विचारों से प्रभावित हो कर कारपोरेशन की सेवा करना प्रारम्भ किया। १९२८ में जब आल पार्टीज कान्फ्रेन्स की बात कांग्रेस के अधिवेशन में हुई थी, जिन्ना साहब और विभिन्न दलों के नेताओं ने जो प्रस्ताव, आल पार्टीज कान्फ्रेन्स जो लखनऊ में हुई थी, उसमें पास किया था, उस पर विचार करने के लिये कांग्रेस का अधिवेशन १९२८ में कलकत्ते में हुआ था उसके ये जनरल

[श्री चन्द्रभानु गुप्त]

सेक्रेटरी थे और जनरल सेक्रेटरी होने के नाते उस अधिवेशन को सफल बनाने में उन्होंने यथा शक्ति प्रयास किया था। १९२८ में जब बंगाल की कांग्रेस के दो टुकड़े हो गये, एक जे० एन० सेन गुप्ता के और एक सुभाष बाबू के नेतृत्व में कार्य करने लगा तो ये सुभाष बाबू के दायें और बायें कार्य करते रहे। एक विख्यात अखबार 'लिबर्टी' निकलता था जिसका सम्पादन सुभाष बाबू करते थे और उसके मैनेजिंग डाइरेक्टर भी सुभाष बाबू थे, लेकिन जब सुभाष बाबू को जेलखाने में बन्द कर दिया गया तब विधानचन्द्र जी ने उसकी मैनेजिंग डायरेक्टरशिप ली और उसको चलाने का प्रयास किया।

वे आल इंडिया मेडिकल काउंसिल के अध्यक्ष चुने गये और वे ट्रापिकल मेडिकल कौंसिल के सदस्य एक जमाने तक रहे। उन संस्थाओं को वे अपने विचारों से और अपनी सूझ-बूझ से प्रेरणा देते रहे। जैसा कि माननीय सदस्यों को भलीभांति विदित होगा, १९४७ में वे उत्तर प्रदेश के गवर्नर नियुक्त हुये। जिस समय वे गवर्नर नियुक्त किये गये उस समय वे अमरीका में थे। जब वे लौट कर आये और उनको पता चला कि वे उत्तर प्रदेश के गवर्नर नियुक्त हो गये हैं तो उन्होंने उस पद पर कार्य करने में असमर्थता प्रकट की। असमर्थता इसलिये नहीं प्रकट की कि उनको उस पद से कोई चिढ़ थी, बल्कि वे एक ऐसा जीवन व्यतीत करना चाहते थे जिसमें कार्य करने का पूरा मौका मिले। ऐसे उनके भाव थे और ऐसे उनके विचार थे कि कदाचित् वे राज्यपाल के पद पर रह कर वे सेवायें नहीं कर सकेंगे कि जिन सेवाओं को वे करना चाहते थे।

१९४७ में जब श्री प्रफुल्लचन्द्र घोष ने मुख्य मन्त्री पद से बंगाल में इस्तीफा दिया तो एक मत से वे वहां के मुख्य मंत्री चुने गये। और जिस दिन से वे मुख्य मन्त्री बने उसके बाद उस दिन तक जब-जब मुख्य मन्त्री पद के चुनाव के अवसर आये, सदैव एक राय से वे मुख्य मन्त्री पद को प्राप्त करते रहे और जब उनके जीवन का अन्त हुआ, वे चौथी दफा मुख्य मन्त्री पद को सुशोभित कर रहे थे। उस पद को सुशोभित करते हुये उन्होंने बंगाल की जो सेवा की, जो कलकत्ते की सेवा की और देश की सेवा के कार्य में जिस तरह से अपने जीवन को लगा दिया, वह भी देशवासियों के लिये एक गौरव की बात है। वे हमारे बीच से चले गये, परन्तु वे जिस ढंग से संसार से गये, जिस तरह से हमसे विदा हुये, वह जहां तक उनका संबंध है और उनके हमारे बीच से चले जाने का सम्बन्ध है, एक गौरव की बात उनके लिये थी। और वह गौरव की बात इसलिये थी कि आखिर तक वे देश के कार्य में, निर्माण के कार्य में अपना जीवन देते रहे। हम सब जानते हैं कि जिस दिन वे विदा हुये इस संसार से, उस दिन उनकी वर्षगांठ थी। सुबह लोग उनकी वर्षगांठ के अवसर पर बधाई देने के लिये आये और १२ बजे के बाद वे हमसे विदा हुए। तो ऐसा व्यक्ति जिसने जीवनपर्यन्त, अपनी पूरी उम्र तक सेवा के कार्य में अपने को जुटाया, वह ऐसा व्यक्ति था जो दूसरों को प्रेरणा देता था, कार्य करने की क्षमता दूसरों में पैदा करता था। बंगाल में जहां इतनी समस्यायें थीं उन समस्याओं का निराकरण उन्होंने जिस खूबी से किया वे इतिहास की ही बातें नहीं हैं, बल्कि ऐसी बातें हैं जो हमारी नजरों के सामने से गुजरी हैं। किस तरह से वहां पर हमारे रेफ्यूजी भाई आये ईस्ट बंगाल से, उनको किस तरह से उन्होंने बसाया, बावजूद तकलीफों के और परेशानियों के, क्या उसे भुलाया जा सकता है? वह बंगाल में उन नेताओं में थे जिन्हें केवल हिन्दुओं का ही विश्वास प्राप्त नहीं था, परन्तु उनका भी विश्वास प्राप्त था जो उनके नजदीक नहीं आ सकते थे, जो उन्हें दूर से ही देखते थे। मुसलमानों का भी उन्हें विश्वास प्राप्त था। कौन नहीं जानता है कि वह किस प्रकार अपने प्रदेश के मसलों को, जब वह मुख्य मंत्री के नाते दिल्ली आते थे, केन्द्रीय सरकार के सामने रखते थे और किस प्रकार अपने प्रदेश की समस्याओं को वर्किंग कमेटी के सामने प्रस्तुत करते थे।

उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में बंगाल में काफी प्रसार किया। आज कितने ही विश्वविद्यालय बंगाल में उनकी देन हैं और कलकत्ता विश्वविद्यालय, जिसके वह कुलपति रहे, और कलकत्ता कारपोरेशन, जिसके वह मेयर रहे, वे उनकी देनों की छाप से आज भी हमें प्रकाश दे रहे हैं।

उन्होंने संस्थाओं के बनाने में, उनके आदर्शों को ऊंचा करने में, उनको अधिक व्यापकता देने में, जो कार्य किये, वे भी भुलाये नहीं जा सकते। उनमें काम करने की क्षमता इतनी थी कि सुबह ८-८॥ बजे वह सेक्रेटेरियट जाते थे और रात को ८-८॥ बजे लौटते थे। क्या ऐसा व्यक्ति हम सबको जीवन में सबक नहीं देता? क्या ऐसा व्यक्ति अपने छोड़े हुये कार्यों को पूरा करने की प्रेरणा नहीं देता है?

अध्यक्ष महोदय, आज ये दो विभूतियां हमारे बीच से उठ गई हैं, परन्तु जो कार्य उन्होंने किये वे कभी भी भुलाये नहीं जा सकते। वे सदा हमें प्रेरणा देंगे और रास्ता दिखावेंगे। साथ ही वे कार्य जो वे पूरा नहीं कर पाये, यदि आज हम सब उनके प्रति श्रद्धा और सद्भावना प्रकट करना चाहते हैं तो वह तभी सही और ठीक समझी जायगी जब कि हम सब इस बात का तहैया करें कि हम उनके बचे हुये कार्यों को पूरा करें, उनके उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक और सहयोगी बनें।

अध्यक्ष महोदय, मैं इन शब्दों के बाद आपसे यह प्रार्थना करूंगा कि इस सदन को इन दो विभूतियों के उठ जाने से भारी दुख है और इस सदन की समवेदना उनके घर वालों के पास भेजने की आप कृपा करें।

श्री कृष्णपालसिंह (जिला रायबरेली)—अध्यक्ष महोदय, स्वयं जलकर हम लोगों को प्रकाश देने वाले वह राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन आज हम लोगों के बीच से उठकर स्वर्गलोक को चले गये हैं। यह बहुत ही दुःख का विषय है। परन्तु उनकी प्रतिभा और उनके कृत्य सदैव ही हमें प्रेरणा, बल और धैर्य देते रहेंगे। उनका जन्म १ अगस्त, सन् १८८२ को हुआ और हमारे विधानचन्द्र राय, जो विधान बाबू के नाम से पुकारे जाते थे, का जन्म १ जुलाई, को हुआ। दोनों की मृत्यु एक ही दिन यानी पहली जुलाई को हुई। भारत के दोनों छोरों पर बंगाल तथा उत्तर प्रदेश में पहली जुलाई को दुख की लहर चली उसका वर्णन अब इतनी देर के बाद करना असम्भव है। परन्तु जिन्होंने विधान बाबू की अन्तिम यात्रा में भाग लिया या उसका वर्णन पढ़ा व भलीभांति समझ सकते हैं कि जनता को इसके ऊपर कितना दुख हुआ।

पिछले ३ वर्षों से राजर्षि टंडन जी भीष्म पितामह के समान अपनी शैय्या पर पड़े रहे और उनका अन्तिम सार्वजनिक प्रोग्राम जो हुआ, वह अभिनन्दन ग्रन्थ का था जो राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद ने उन्हें घर जाकर दिया। उनकी कर्मनिष्ठा इसी बात से काफी प्रकट होती है कि प्रयाग के एक विद्यालय की, जिसके वह अध्यक्ष थे, मीटिंग उनके घर पर हो रही थी और वह बेहोश पड़े हुए थे। कुछ समय के बाद जब उनको होश आया तो उन्होंने यह प्रार्थना की कि चूंकि वह होश में आ गये हैं इसलिये वह मीटिंग उनके सामने ही की जाय। तो मीटिंग उनके सामने हुई और उसमें जो कुछ भी वह अपने विचार रख सके, वे रखे और अपनी असमर्थता दिखाते हुये त्यागपत्र दे दिया। ऐसे उच्च आदर्श वाले पुरुष हमारे लिये सदैव ही मार्ग-प्रदर्शक रहे हैं। उनकी सेवा, त्याग और सादगी को देखते हुये जनता की ओर से जो राजर्षि की पदवी उन्हें दी गई वह बिलकुल ही उचित रही है। उन्होंने सदैव ही अधर्म और अन्याय के विरुद्ध डटकर लड़ाई लड़ी, चाहे वह न्यायालय में हो, चाहे वह उनके नगरपालिका के अध्यक्ष पद के समय रही हो, चाहे वह आल इंडिया कांग्रेस के अध्यक्ष पद से रही हो। जहां भी वह रहे वह सदैव सत्य और न्याय के लिये लड़ते रहे। उन्होंने देश के विघटन का और विभाजन का डट कर विरोध किया। हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाये जाने के प्रयास में वह सदैव लगे रहे। मेरा सौभाग्य था कि लगभग ४ वर्ष पहले जब वह लखनऊ पधारे थे "अंग्रेजी-हटाओ" आन्दोलन के सिलसिले में, तब मुझे उनके दर्शन प्राप्त हुये थे। उस समय राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति जो उनके विचार मुझे सुनने को मिले, उनसे अभी भी मुझे ऐसा लगता है कि वह सम्मुख बैठे कुछ कह रहे हैं।

आज हिन्दी के विषय को लेकर एक अजीब बहस चालू हो गई है कि राष्ट्रभाषा हिन्दी हो या न हो, ऐसे समय में राजर्षि टंडनजी का अभाव और भी अखरता है। आज

[श्री कृष्णपालसिंह]

हिन्दी के सरलीकरण के नाम पर हिन्दी साहित्य को बिगाड़ा जा रहा है और उसमें नाना प्रकार के शब्दों को स्थान दिया जा रहा है। मिसाल के तौर पर रामायण की चौपाई है कि "मस्तुरात राम ले साथा, मुल्क मुकुम्मिल किया अनाथा" इसी प्रकार व्यवहार श्लोकों के साथ किया जा रहा है, "किंचित् फिकर न कर्तव्यं, कर्तव्यं जिकरे खुदा, अल्लाताला प्रसादेन सर्व कार्य फतेह् भवेत्"।

श्री अध्यक्ष—देखिये, कृष्णपालसिंह जी, यह अवसर ऐसा नहीं है, जिसमें हम किसी बहस में प्रवेश करें। यह बहुत ही पवित्र अवसर है।

श्री कृष्णपालसिंह—मैं उसे छोड़ता हूं।

हमें हिंदी के ठीक विकास के लिये उनकी आज अधिक आवश्यकता थी। इसलिये उनका अभाव हम लोगों को अधिक अखरता है। उन्होंने सदैव ही एक राज्य, एक भाषा, और एक उद्देश्य के लिये लड़ाई लड़ी। राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिये उन्होंने अपने जीवनकाल में काफी मनवा भी लिया। उन्होंने अपने विचार सदा राष्ट्र के हित में लगाये और पद-लोलुपता छोड़कर से सिद्ध भी किया।

किसानों के लिये उन्होंने सन् १९१८ में 'किसान सभा' प्रयाग में स्थापित की। कई वर्षों के प्रयासों से उन्होंने उसे प्रान्त भर में किसान संघ के नाम से फैलाया। उनका यह भी प्रयास रहा कि यह राष्ट्र भर की एक संस्था बन जाय और उस प्रयास में उन्हें लगभग १० वर्ष लगे। करीब १९३१ में जबकि राष्ट्रीय किसान संघ बनाने का उनका प्रयास पूरा होने जा रहा था, तभी आन्दोलन हो जाने के कारण तथा किसान संघ के सभी व्यक्तियों के इस आन्दोलन में घुस जाने के कारण सरकार द्वारा यह दल अवैध घोषित कर दिया गया और तब से यह कार्य स्थगित हो गया। उसके बाद से किसान संघ या किसानों के प्रति उस प्रकार जम कर और स्थिर नीति को लेकर चलने का अभाव अब तक चला आ रहा है। राजर्षि टंडन जी ने इस सदन की शोभा अध्यक्ष पद पर बैठ कर बढ़ायी थी। अध्यक्ष पद से उनकी प्रतिष्ठा न बढ़ कर असल में उन्होंने ही इस सदन की प्रतिष्ठा बढ़ायी है।

हमारे माननीय नेता सदन ने बहुत विस्तार में उनकी अध्यक्षता के कार्यों के बारे में बतलाया मैं उन्हें फिर दुहराना नहीं चाहता, परन्तु मैं इतना अवश्य कहूंगा कि उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि एक दल में रहते हुये भी मनुष्य अपने निर्णय पर किस प्रकार से स्वतंत्र रह सकता है। वे सर्वप्रिय अन्त तक रहे और उन्होंने सदस्यों को मर्यादा के अन्तर्गत कार्य करना सिखलाया तथा सदन की मर्यादा को भी रखा। यदि कभी गवर्नमेंट या मंत्रिमंडल की तरफ से कभी कुछ ऐसी बात हुई तो उन्होंने उन्हें भी मर्यादा के अन्दर ही रहने की शिक्षा दी। आज राजर्षि टंडन जी हम लोगों के बीच में नहीं हैं, परन्तु हमें उनके कार्य, उनकी प्रतिभा, प्रेरणा व उत्साह देते रहेंगे। मेरे दल की तरफ से अध्यक्ष महोदय से यह अनुरोध किया गया है कि वे या तो सदन में या सदन के सामने प्रांगण में स्वर्गीय राजर्षि टंडन की प्रतिमा की स्थापना करा दें और वह अनुरोध सभी दल के नेताओं से भी किया गया है जिससे हम लोगों को नित्य राजर्षि टंडन की प्रतिमा के दर्शन करने से प्रेरणा तथा बल मिलता रहे और हम इस काबिल रह सकें कि आज के बजाय हम नित्य उनको श्रद्धांजलि दे सकें।

***श्री गेंदासिंह** (जिला देवरिया)—माननीय अध्यक्ष महोदय, देश की दो महान् विभूतियों का निधन एक ऐसी क्षति है जिसकी पूर्ति होने की सम्भावना नहीं है। ये विभूतियां उस भूमि में उत्पन्न हुई थीं जो सम्भवतः आज उस प्रकार की नहीं रही हैं। यों तो निधन सभी का होता है, लेकिन पूज्य टंडन जी का निधन एक ऐसा निधन था जो उत्तर प्रदेश के लिये बहुत दुखदायी है। श्रीमन्, उनके जीवन को चाहे वह इस सदन के भीतर का हो या सदन के बाहर का, जब हमें उसे देखने का अवसर मिलता है तो उससे बड़ी प्रेरणा मिलती है और उन आदर्शों

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

पर चलने की ताकत तो हम लोगों में आज दिखलाई नहीं देती, लेकिन उनके इर्द-गिर्द भी रह कर हम अपने देश की, अपने परिवार व कुटुम्ब की बहुत बड़ी सेवा कर सकते हैं। टंडन जी का जीवन तपोमय था, टंडन जी उन कठिनाइयों से लड़ने वाले थे, जिनके सामने हर आदमी जल्दी टिकता नहीं है, उनका तो सारा जीवन ही कठिनाइयों से लड़ने का रहा है। कभी भी कोई अवसर-वादिता या सांसारिक सुखों की लिप्सा उन को झुका न सकी और उन का झुकना उन के आगे सम्भव नहीं हुआ। जब कभी ऐसी लड़ाई के अवसर आये उनमें उन्हीं की जीत रही, यद्यपि यह बात साधारण लोगों में नहीं मिलती है। उनका यह भी एक अपूर्व अनोखा गुण रहा कि वह अपने विरोधियों का विश्वासपात्र बनने की भी एक अमोघ, अद्वितीय शक्ति रखते थे, ऐसी शक्ति जल्दी किसी में देखने को नहीं मिलती। माननीय मुख्य मंत्री जी ने इस सम्बन्ध में जो रोशनी डाली है मैं उनके विचारों से सहमत हूं और मैं समझता हूं कि अगर एक बात यह कही जाय कि अपने राजनीतिक प्रतिद्वंदियों के ऊपर इतना घनिष्ठ विश्वास, इन राजनीतिक तिद्वंदियों या किसी व्यक्ति में हो उसकी वह इस देश में पहली मिसाल थे। जिस समय विरोधी दल से उनके प्रति कुछ थोड़ी सी अनास्था प्रकट की गई थी उस समय उन्होंने जिस दृढ़ता का परिचय दिया वह अनूठी चीज है। अध्यक्ष महोदय, उस समय हम लोग सदन के सदस्य नहीं थे, लेकिन अखबारों में उन बातों को पढ़ा था। पहले दिन की बात अखबारों में देखकर मन में आशंका हुई कि कहीं इसका परिणाम यह तो न होगा कि ऐसा दृढ़ और इतना निष्पक्ष आदमी जो आज विधान सभा का अध्यक्ष है उसको हटना पड़े, परन्तु दूसरे दिन यह मालूम हुआ कि नहीं, उन विरोधियों के मन पर यह प्रभाव पड़ा और यह भय हुआ कि इससे निष्पक्ष आदमी इस कुर्सी के लिये मिलना सम्भव नहीं है और उन्होंने अपना अविश्वास का प्रस्ताव वापस ले लिया। साथ ही टंडन जी ने यह भी साफ कह दिया था कि अगर एक भी विरोधी दल का सदस्य मुझ में विश्वास नहीं रखता तो मैं इस कुर्सी पर नहीं बैठूंगा, यह कोई साधारण बात नहीं थी, उसी महान् पुरुष से और उस के महान् व्यक्तित्व से ऐसी आशा की जा सकती थी। वह सदा ही धन, प्रतिष्ठा और सांसारिक जो बड़ी चीजें हैं उनको ठुकराते रहे। जब भी जीवन में एक ओर सेवा और त्याग और दूसरी ओर पद, प्रतिष्ठा और धन के मुकाबिले का अवसर आया तो उन्होंने धन, पद, प्रतिष्ठा को एक तरफ रखा और इनको ठुकरा कर जीवन के आदर्शों को उज्ज्वल किया।

अध्यक्ष महोदय, दो व्यक्ति इस देश में पर्यायवाची नामों से प्रसिद्ध हुये, एक तो महात्मा गांधी "बापू" कहलाये और पूज्य टंडन जी को लोग "बाबूजी" कहत थे। हर आदमी उन को सम्मानित समझता कि मैं किस को बाबू जी कह रहा हूं, ऐसा सौभाग्य जल्दी किसी को प्राप्त नहीं होता।

जो सेवा उन्होंने किसानों की की वह इतने दिनों तक याद रहेगी कि जब तक किसान का पेशा यहां जीवित रहेगा, किसान संगठन के लिये उनकी एक जीवित संस्था कायम करने के लिये जो प्रयास उन्होंने किया वैसा प्रयास कोई न कर सका। अध्यक्ष महोदय, एक बात मैं समझता हूं टंडन जी की सीखने की हम लोगों के लिये है, वैसे तो बहुत-सी हैं, लेकिन एक बात ऐसी है जिसको सीख करके हम अपने देश की राजनीति में एक बड़ा परिवर्तन ला सकते हैं। जब शरीर कुछ काम ठीक से न कर सके और शरीर ऐसा हो कि जब वह अपने उत्तरदायित्व को पूरी तरह से वहन करने में समर्थ न हो सके तो जिम्मेदारी के ओहदे को अपने सिर पर न रखें। पार्लियामेंट के सदस्य वह रह सकते थे, लेकिन यह अनुकरणीय बात है, भारतीय परम्परा का एक द्योतक है कि अपने जीवन में ही अपने आगे की पीढ़ी हम तैयार करें। अपने सामने यह देखें कि आगे की पीढ़ी जो कार्य हम कर रहे थे उसको करने में सफलता प्राप्त करती है। यह टंडन जी के जीवन से सीखने की बात है और मैं समझता हूं यह कुछ आदर्श हैं उनके जिनको अपना करके सार्वजनिक जीवन को बहुत पवित्र किया जा सकता है।

मैं और अधिक उनके सम्बन्ध में न कह करके यह जरूर कहना चाहता हूं कि गवर्नरशिप वगैरह तो ऐसे लोगों के लिये बहुत छोटी बात थी।

[श्री गेंदासिंह]

विधान बाबू अगर, मैं तो समझता हूं, किसी प्रकार यू० पी० के गवर्नर हो जाते तो यहां का सौभाग्य होता। वह दिन कैसे होते जब विधान बाबू जैसे व्यक्ति उत्तर प्रदेश की गवर्नरी पर होते ! टंडन जी को भी आसाम की गर्वनरी का आफर हुआ था जिसको उन्होंने इनकार किया था। तो मैं उनके प्रति अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये आपसे निवेदन करता हूं कि आप, परिवार तो हम भी हैं उनके, लेकिन एक और परिवार जो बहुत निकट होता है, उस परिवार को हमारी समवेदना अवश्य भेज दें।

विधानचन्द्र राय के सम्बन्ध में मैं ज्यादा जानकारी उनके बहुत निकट रह करके तो नहीं रखता, लेकिन इतनी बात जरूर समझता हूं कि ऐसे कुशल शासक बिरले हैं इस देश में। हम तो इस प्रदेश के रहने वाले हैं। पर प्रदेश के उन लोगों की तरफ से विधान बाबू के लिये आज सचमुच रोना चाहते हैं जो जा करके लाखों आदमी विधान बाबू की छत्रछाया में रह कर अपनी रोजी कमाते थे। उन लाखों आदमियों को आज इस बात की चिन्ता है कि विधान बाबू के बाद क्या उत्तर प्रदेश और बिहार के लोग, जो अपनी रोजी कमा रहे थे वहां, वह उसी तरह से अपना जीवन-यापन कर सकेंगे कि नहीं। यह भय है लोगों के मन में। बड़ा भारी गुण है, कोई मामूली बात नहीं है। मालूम नहीं कितनी मर्तबा कलकत्ता में बड़ी तनातनी का वातावरण उत्पन्न हुआ, लेकिन विधान बाबू जैसे व्यक्ति का ही काम था कि ऐन्टी यू० पी० और बिहार की फीलिंग को दबा करके, समझा करके फिर उनको जहां का तहां रहने दिया। बंगाल कितने संकट में है, इसकी जानकारी साधारण तौर पर हम लोगों को नहीं हुआ करती है। जब कभी कुछ लोग पाकिस्तान से बंगाल छोड़ करके भी हमारे पास आते हैं तो कुछ कठिनाई का ज्ञान हमको कभी-कभी हुआ करता है, लेकिन वह कठिनाई जो विधान बाबू के सामने थी, उसको कितनी दृढ़ता और कुशलता पूर्वक उन्होंने निभाया है, इसकी जितनी भी प्रसंशा की जाय थोड़ी है। इस नियोजन के युग में बूढ़ा आदमी अस्सी वर्ष की उम्र में दिल्ली के कमरे-कमरे में जाकर पश्चिमी बंगाल की जरूरत को पूरा करने का प्रयत्न करे यह देख कर बहुत आश्चर्य होता था। विधान बाबू जैसे व्यक्ति को बंगाल की इतनी चिन्ता होना और इतनी मुस्तैदी से काम करना इस वृद्धावस्था में, यह किसी भी नौजवान के लिये पथ-प्रदर्शन करने वाली बात है। ऐसे लोगों के सामने मस्तक झुक जाता है। मैं विधान बाबू के लिये भी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मुझे जहां तक मालूम है शायद उनका परिवार बहुत निकट का नहीं है, लेकिन जो लोग भी हों उनको हमारे दल की श्रद्धांजलि पहुंचाने का अध्यक्ष महोदय आप प्रयत्न करेंगे।

श्री उग्रसेन (जिला देवरिया)—माननीय अध्यक्ष महोदय, श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये, मेरी तबीयत ठीक नहीं है, यदि आप इजाजत दें तो मैं बै कर दो मिनट ले लूं।

श्री अध्यक्ष—ठीक है।

श्री उग्रसेन—आदरणीय अध्यक्ष महोदय, राजर्षि टंडन के निधन से देश और प्रदेश की एक बहुत बड़ी और महान् आत्मा उठ गयी है। उनके बारे में नेता सदन ने और अन्यान्य विरोधी दल के नेताओं ने जो कुछ कहा है वह सब थोड़ा है। यों तो मेरी व्यक्तिगत मुलाकात राजर्षि टंडन से पहले पहल जब मैं एक साधारण विद्यार्थी था, वाराणसी में भारत माता के मन्दिर के उद्घाटन के अवसर पर हुई थी। सन् १९३६ में मैंने उन्हें निकट से खा था। त्रिपुरी कांग्रेस में जब मैं गया था तो आचार्य नरेन्द्र देव जी के यहां जिस तन्मयता के साथ और वात्सल्य प्रेम से टंडन जी बच्चों से मिलते थे और उनकी बातों को सुन कर उनमें दिलचस्पी लेते थे, यह १९३९ में मैंने देखा था।

अध्यक्ष महोदय, आज मुल्क एक गम्भीर परिस्थिति से गुजर रहा है। १५ साल हो गये, अंग्रेज चले गये, लेकिन आज अंग्रेजियत का बहुत बड़ा हमला इस मुल्क पर है। ५० लाख आदमी, जो अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोग हैं, एक बड़ा मनोवैज्ञानिक आन्दोलन चला रहे हैं। वे इस बात का प्रचार कर रहे हैं कि इस मुल्क में भावात्मक एकता अगर आ सकती है तो केवल अंग्रेजी के ही

माध्यम से आ सकती है। इस अवसर पर जब हमारी बचाव पंक्ति बहुत ही मजबूत होनी चाहिये थी तब हमारी राष्ट्र भाषा हिन्दी का इतना बड़ा पोषक और हमारी बचाव पंक्ति का बड़ा सिपहसालार उठ गया। इससे हमारी बचाव पंक्ति को बहुत बड़ी क्षति हुई है।

राजनीतिक क्षेत्र के अतिरिक्त सांस्कृतिक क्षेत्र में राजर्षि टंडन जी का जीवन भारतीय संस्कृति का बिलकुल प्रतीक था। सबसे महत्वपूर्ण काम जो उन्होंने स मुल्क में किया वह यह कि राष्ट्र भाषा हिन्दी को भारतीय संविधान में एक प्रमुख स्थान दिलवाया और हिन्दी को राष्ट्र भाषा का स्थान दिलाने का प्रयत्न किया। मैं आदरणीय सदन के सदस्यों को याद दिलाना चाहता हूं कि जब यह प्रश्न संविधान सभा में पेश था उस समय बड़ी तरेबाजियां चल रही थीं। आज के प्रधान मंत्री, इस रूप में कि हिन्दी राष्ट्र भाषा संविधान में रख कर घोषित कर दी जाय, पक्ष में नहीं थे। मगर बड़ी निर्भीकता के साथ टंडन जी ने जो रूप अख्तियार किया तो उस समय प्रधान मंत्री को स्वयं तमाम दक्षिण के लोगों का सहारा लेना ड़ा और प्रधान मंत्री को इसके विरोध में एक गोल बनाना पड़ा टंडन जी की इस व्यवस्था तथा इस प्रतिरोध का मुकाबला करने के लिये। मगर उन्होंने अपनी बात मनवा ली। दुख इस बात का है कि उनके मरने के पहले जिस राष्ट्र भाषा को बनवास १५ वर्ष के लिये दिया गया था, उस बनवास का प्रबन्ध सरकार ने अनवरत काल के लिये कर दिया है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन राजर्षि टंडन के जीवन की सभी भावनाओं का मूल रूप है। अन्तिम दिनों में वे बहुत दुःखी रहा करते थे। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के जो झगड़े थे उनसे वे बहुत दुःखी रहा करते थे और उन्होंने केन्द्रीय सरकार से आग्रह किया कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन को वह ले ले। इतनी बड़ी संस्था एशिया में कोई नहीं है, जिसमें लाखों विद्यार्थी हिन्दी की परीक्षा में बैठते हैं। आखिर सरकार ने उनकी बात मानी और उनके जीवनकाल में ही सरकार ने घोषणा कर दी और उसका शासन एक प्रबन्धकारिणी समिति के अन्तर्गत करना पड़ा। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के माध्यम से जो उनकी सेवाएं देश और प्रदेश में रही हैं उन्हें भुलाया नहीं जा सकता है।

राजर्षि टंडन निर्भीक विचार के थे। तर्कों में जो जहां तक मैं समझ पाया था वे सुकरात का मुकाबला करते थे। हर बात में वे तर्क करते थे और यदि तर्क से कोई उन्हें समझा देता था तो उसके मानने में उन्हें कोई आनाकानी नहीं होती थी। इस सम्बन्ध में उन्हें बहुत से प्रतिरोधों का भी मुकाबला करना पड़ा। श्रीमन्, एक समय की घटना का मैं याद दिलाऊं। राष्ट्रपिता पूज्य बापू ने एक पत्र लिखा राजर्षि टंडन को कि आप साहित्य सम्मेलन चलाते हैं, मैं भी राष्ट्र भाषा प्रचार में काम करता हूं, लेकिन राष्ट्र भाषा प्रचार आन्दोलन और साहित्य सम्मेलन की रीति-नीति में विभिन्नता हो रही है और मैं हिन्दी साहित्य सम्मेलन का भी सभापति रह चुका हूं और उसका सदस्य हूं। तो ऐसी हालत में मेरा उसका सदस्य रहना ठीक नहीं है। राजर्षि टंडन ने एक क्षण भी सोचने में नहीं लगाया कि उनको क्या उत्तर दूं। उन्होंने पूज्य बापू को पत्र लिखा कि यदि साहित्य सम्मेलन और राष्ट्र भाषा की रीति-नीति में भिन्नता है और आप दक्षिण में राष्ट्र भाषा प्रचार आन्दोलन चला रहे हैं तो आप साहित्य सम्मेलन की सदस्यता से इस्तीफा दे दें और राष्ट्रपिता को हिन्दी साहित्य सम्मेलन से इस्तीफा देना पड़ा। इस सम्बन्ध में कवीन्द्र रवीन्द्र से भी उनका मतभेद हुआ।

माननीय मुख्य मंत्री ने बहुत विस्तार से उनके बारे में बताया है, लेकिन राजनीति की एक कड़ी बताना वे भूल गये। वह जनतंत्र की बहुत बड़ी कड़ी है और उसी कड़ी के आधार पर मुख्य मंत्री आज इस सदन में विराजमान हैं। यह एक बहुत बड़ा प्रश्न उपस्थित हो गया है, विशेषकर सरकारी पक्ष की राजनीति में कि संगठन बड़ा है या सरकार और जब आप के प्रधान मंत्री ने कहा कि संगठन को सरकार के अन्तर्गत रहना चाहिये तो वह राजर्षि टंडन ही थे—हिन्दुस्तान और दुनिया के इतिहास में उनका नाम अमर रहेगा—

[श्री उग्रसेन]

जिन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी सुप्रीम है, केन्द्रीय सरकार सर्व सत्ता सम्पन्न नहीं रह सकती और मेरे रहते यह नहीं हो सकता और उन्होंने कांग्रेस अध्यक्ष पद से त्याग-पत्र दे दिया। राजर्षि टंडन ने इस अवसर पर जिस दृढ़ता का परिचय दिया था वह समुद्र का टिमटिमाता हुआ चिराग है, एक रोशनी है जो हमारा पथ-प्रदर्शन कर सकती है।

मैं बहुत ज्यादा तो नहीं कहना चाहता, लेकिन जहां तक उनके अध्यक्ष पद का प्रश्न है, उन्होंने जो व्यवस्थाएं दी हैं, आप भी उनको पढ़ते होंगे, उनकी व्यवस्थायें हमारे लिये मार्ग-दर्शक का काम कर रही हैं। केन्द्रीय असेम्बली में स्वर्गीय पटेल और राजर्षि टंडन इन दो व्यक्तियों की ही व्यवस्थाएं ऐसी हैं जो हिन्दुस्तान की संसदीय विधायिकाओं में अनुकरणीय हैं। श्रीमन्, यदि हम और आप दोनों उनसे शिक्षा लें तो कम से कम इतना तो हो सकता है कि इस मुल्क में जनतंत्र की रक्षा की जा सकती है। इस सम्बन्ध में एक घटना सुना दूं। इस विधान सभा के एक मुस्लिम लीग के सदस्य ने अखबार में एक ऐसा बयान दे दिया था जो आदरणीय टंडन जी की व्यवस्था के विरुद्ध था। टंडन जी महान् दुखी हुए। उन्होंने कहा कि यदि कोई आदरणीय सदन का सदस्य सदन में कहे या बाहर कहे कि वह मेरे ऊपर अविश्वास रखता है तो मैं इस्तीफा दे दूंगा। इससे ज्यादा सजग प्रहरी जनतंत्र का और कौन हो सकता है? हाउस आफ कामन्स को लोग कहते हैं कि दुनिया में जनतंत्र की मां है, [× × × × × ×] मगर उस हाउस आफ कामन्स में भी ऐसी कोई परम्परा नहीं है कि हाउस आफ कामन्स के स्पीकर इस बात का भी खयाल रखें कि पार्लियामेंट के सदस्य बाहर चुनाव क्षेत्र में मेरे बारे में क्या कहते हैं और उनकी भावना क्या है और सदन में उसका असर उनकी व्यवस्था पर और राजनीति पर क्या पड़ेगा?

माननीय उपनेता विरोधी दल, जनसंघ ने कहा है कि माननीय टंडन जी की एक मूर्ति होनी चाहिये। समाजवादी होने के नाते मुझ कोई एतराज नहीं है। हम चाहते हैं कि मूर्ति उनकी बने जो मर गये हैं, लेकिन उनकी न बने जो जिन्दा हैं। यहां पर बात उल्टी हो रही है। आप मूर्ति बनाइये अवश्य। मगर इस बात को सोचिये कि कौन सी ठोस चीज हम करें, प्रदेश की जनता करे और प्रदेश की सरकार करे जिससे राजर्षि का अमर प्रतीक सदैव विद्यमान रहे। लेकिन सबसे बड़ी कमी हमारे देश में यह है कि हम अपने पुराने आदर्शों को भूलते चले जा रहे हैं। बापू जी मर गये और आज यह हालत है कि गांधी जयन्ती में अगर डिस्ट्रिक्ट बोर्डों के लड़के न हों तो शहर के लोगों को पता तक न चलेगा कि यह क्या है। गांधियन विचारधारा बदलती जा रही है। माननीय टंडन जी की देन को कायम रखने के लिये पुस्तकें लिखी जायं, अखबारों में संस्मरण लिखे जायं और लेख लिखे जायं, लेकिन इस बात की भी व्यवस्था होनी चाहिये कि लोग उनको पढ़ें और उनको हृदयंगम करें और उन पर आचरण करें।

आदरणीय टंडन जी में कितनी बड़ी विचित्रता थी और साथ ही विरोधाभास भी था। "वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि" (भवभूति) यानी जब वे निर्णय लेते थे तो उनका निर्णय वज्र से भी कठोर होता था और उनका समस्त शरीर कांप उठता था, वे झल्ला उठते थे और उस समय कुछ नहीं सुनते थे। लेकिन जब किसी गरीब की कोई बात होती थी तो वे पुनीत गंगा जी की तरह से द्रवित हो जाते थे। मैं चाहूंगा कि माननीय टंडन जी ने अध्यक्ष पद से जो परम्परायें कायम की हैं उनको आप कायम रखें।

हिन्दी को राष्ट्र भाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने में उन्होंने अपने को कुरबान किया। क्या आप समझते हैं कि अपने जीवन के अन्तिम दिनों में जो रेडियो की हिन्दी भाषा में परिवर्तन किया गया उससे उनकी आत्मा को ठेस नहीं लगी? यह क्या कोई कहने का प्रश्न है कि दर्जा तीन से प्रदेशीय सरकार ने अंग्रेजी पुनः चालू कर दी, उससे उनकी आत्मा जो बिस्तर पर पड़ी

[× × × × × ×] माननीय अध्यक्ष के आदेश से हटा दिया गया।

कराह रही थी, उसको ठेस नहीं लगी ? मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि उनकी श्वास के साथ हिन्दी राष्ट्र भाषा की श्वास चलती थी।

मैं यह दावा नहीं करता कि विरोधी पक्ष ही हिन्दी राष्ट्र भाषा के अग्रदूत हैं और वे ही इस मुल्क में भारत माता को जीवन दे सकते हैं। उधर के लोग भी जो बैठे हैं वे बड़े बड़े लोग हैं और वे उसके बड़े हिमायती हैं और उसका ही सदैव चिन्तन भी किया करते हैं, ऐसी मेरी जानकारी है। मैं कहता हूं कि अगर हमें श्रद्धांजलि अर्पित करनी है तो इस बात का प्रयत्न होना चाहिये कि दर्जा तीन से अंग्रेजी समाप्त कर दी जाय। अगर कहीं महाराष्ट्र में, तामिलनाद आदि में प्रतिरोध होता है तो एक ही रूप होना चाहिये कि हिन्दी भाषाभाषी प्रान्तों में जैसे बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में सारा कार्य हिन्दी में ही हो, जिससे आगे चल कर दक्षिण भारत के लोगों को भी लालच आ जाय कि यह एक अच्छा और पुनीत काम है, इसको क्यों न अपनाया जाय। आज अविश्वास है, भ्रम फैला हुआ है, मगर हमको सही रूप में अपना काम करना है। अगर भगीरथ की तरह गंगा को पृथ्वी पर लाना है तो उसके लिये हमें सही रूप में काम करना होगा।

इन शब्दों के साथ मैं चाहूंगा कि आप मेरी और सोशलिस्ट दल की भावना को उनके परिवार के पास भिजवा दें। मुझे इस बात का शोक है कि विधानचन्द्र राय भी उसी दिन उठ गये। देश की दो विभूतियां उठ गयीं। यह विधि की विडम्बना है। लोग कहते हैं कि इतिहास दोहराया जाता है। मैं कहता हूं कि इतिहास बनाया जाता है। १९४० में जब स्वर्गीय सुभाषचन्द्र बोस त्रिपुरी कांग्रेस से इस्तीफा दे कर आये तो कलकत्ते में एक बड़ी भारी मीटिंग हुई। उसके बाद विधानचन्द्र राय ने सुभाषचन्द्र बोस के साथ जिस मधुरता के साथ संबंध का निर्वहन किया, वैसा कोई कर नहीं सकता। एक ही खूबी थी उनमें, इतने बड़े माहिर थे इस बात में कि बड़ी बड़ी योजनाएं सब अपने प्रान्त में उन्होंने इकट्ठा कर दीं, जो कोई भी मुख्य मंत्री अपने प्रान्त में नहीं कर पाया। इसीलिए चर्चा थी कि वह प्रधान मंत्री के उत्तराधिकारी हैं। उनकी उम्र काफी ढल चुकी थी, लेकिन काम करने में पता नहीं चलता था कि वह बीमार हैं। सेक्रेटरिएट से जाने के बाद शाम को वह बीमार पड़ गये। कलकत्ते के बाबू साहब लोगों की बड़ी आस्था उन पर थी। विरोधी पार्टी के लोगों को ऐसा काटते थे कि विरोधी भी खुश हो जाते थे। इतनी महारत के साथ काटते थे ! वह देश के राष्ट्र नेता थे। देश की आजादी की लड़ाई में उनकी देन भुलाई नहीं जा सकती। मैं चाहता हूं कि उनके परिवार के पास मेरी और मेरे दल की समवेदना को भेज दें, यही आपसे निवेदन है।

***श्री राघवेन्द्रप्रतापसिंह** (जिला गोंडा)—अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी ओर से और अपनी स्वतंत्र पार्टी की ओर से प्रातः स्मरणीय बाबू जी के प्रति और विधान बाबू के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहता हूं। ये दोनों ऐसी विभूतियां हैं जो आज भी हमारे बीच में न रहते हुए हमेशा के लिए अमर रहेंगी।

स्वतंत्रता संग्राम में लाखों युवक जो आकर्षित थे अवश्य महात्मा गांधी की प्रेरणा से लोग आये, मगर यह वे विभूतियां हैं जिन्होंने लोगों को धीरे-धीरे आकर्षित किया। १९३० में मैं राजनीति में आया और जब मैंने शिशुकाल में आंख खोली तो इन हस्तियों को देखा, जिनके चरित्र को देख और पढ़ कर हमें प्रेरणा मिलती थी। इन्हीं सब की बदौलत हमारे देश को प्रेरणा मिली। राजनीति के महात्मा गांधी ने दो अंग रखे थे—एक राजनीति और दूसरा अध्यात्मवाद। हमारे परम ूज्य बाबू जी अध्यात्मवाद के ुजारी थे। वह मानवता, सज्जनता और सहृदयता के पुजारी थे और प्रतीक थे।

मेरा सम्पर्क यों तो उनसे १९३० में हुआ, लेकिन १९३२ में मुझे उनके साथ गोंडा जेल में दो-तीन महीने रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके दैनिक जीवन से मुझे जो प्रेरणा मिली,

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री राघवेन्द्रप्रतापसिंह]

आज भी मेरे पास जो राजनीतिक धरोहर है, उसका वह अंग है। उसके बाद उनकी कृपा मेरे ऊपर बराबर रही और अन्त तक रही, जिसके लिये मैं अपने को भाग्यवान समझता हूं। १९३७ में जिस समय, उन्होंने इस पद को सुशोभित किया, जिस आसन पर आप हैं, तब भी मुझे उसमें सहयोग देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं उस वक्त उपस्थित था। मैंने भी उनके दर्शन किये। जब उन्होंने आसन को छोड़ा तब भी मैं इस सदन में उपस्थित था। दोनों समय जो उन्होंने उपदेश देश और सदन को दिया, जो उस समय रहे होंगे, आज भी उनके मस्तिष्क में उनके शब्द गूंजते होंगे।

वह निर्भीकता के प्रतीक थे। वह अपने सिद्धान्तों और आदर्शों के लिये किसी के सामने झुकने के लिये तैयार नहीं थे। उन्होंने हमेशा उनको ऊंचा स्थान दिया। जब वह आल इंडिया कांग्रेस कमेटी के प्रेसीडेण्ट हुये यह आसन छोड़कर के, मैं उस वक्त में भी मौजूद था, और मैं उस वक्त भी मौजूद था जब दिल्ली में उनको वह आसन छोड़ना पड़ा। वह उस राजनीति के पुजारी थे जिस राजनीति के अध्यात्मवाद, ईमानदारी, सच्चाई आदि एक अंग थे जिनकी बदौलत कि हमें स्वराज्य मिला था। महात्मा गांधी की जो राजनीति थी जिसने हमें स्वराज्य दिलाया, वह हमारी भारतीय संस्कृति, हमारा अध्यात्मवाद, हमारी सत्य और अहिंसा थी, जिसने स्वराज्य दिलाया। बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन जी राजनीति के उस अंग के प्रतीक थे। उस समय दिल्ली में जो कांड हुआ जिस कारण उनको वह आसन छोड़ना पड़ा, मैं दावे से कह सकता हूं कि कांग्रेस का उसी दिन से अंग-भंग हो गया और हमारे देश की राजनीति ने एक दूसरा रास्ता पकड़ लिया जो हमारे लिये घातक सिद्ध होगा। मैं ज्यादा न कहकर यही कहूंगा कि वास्तव में उन दोनों विभूतियों के निधन से हमारा देश और प्रदेश निर्धन हो गया। यह हमारा भाग्य है कि ऐसी ऐसी विभूतियां हमारे देश से उठ रही हैं और उनकी पूर्ति करने के लिये दूसरी विभूतियां दिखाई नहीं देती हैं। इन शब्दों के साथ मैं फिर आप से प्रार्थना करूंगा कि हम लोगों की समवेदना आप उनके घर तक भेज दें।

विधान बाबू के बारे में आज नहीं बचपन से मैं उनके नाम की चर्चा सुनता रहा हूं। जैसा हमारे भाई माननीय गेंदा सिंह जी ने कहा है कि बंगाल आज एक बहुत बड़ा हाट बेड हो रहा है हमारे देश की पालिटिक्स के लिये। वहां के कलकत्ता ऐसे शहरों में हमारे प्रदेश और अन्य प्रदेशों के लाखों आदमी रहते हैं, वह सुरक्षित थे, निश्चिन्त थे, लेकिन आज उन सबके हृदय में व्याकुलता पैदा हो गई है। अभी हमारे जिले के एक बहुत बड़े कारबारी आदमी वहां से आये। वह बहुत चिन्तित थे कि हम लोगों का क्या हश्र होगा, विधान बाबू के सामने हम लोग निश्चिन्तता से कार्य करते थे, समझते थे कि जैसे गोंडा घर है वैसे ही कलकत्ता भी हमारा घर है। तो आप सोचिये कि कितनी महानता थी उनमें। उनके सामने प्रादेशिकता की भावना बिलकुल नहीं थी और उस भावना के अभाव में लोग कितने निश्चिन्त थे, लोग सोचते थे कि हमारा देश कितना विशाल है। अधिक न कहकर अन्त में मैं आपसे फिर प्रार्थना करता हूं कि इन दोनों परिवारों के प्रति हमारी श्रद्धांजलि आप भेज दें, वैसे तो हम सब लोग उनके परिवार के थे और हम लोगों में से बहुतों का दावा है कि हम उनके परिवार से कम किसी तरह नहीं थे।

श्री झारखंडेराय (जिला आजमगढ़)—मान्यवर, राजर्षि टंडन जी एक सियासी, सन्यासी और सन्त राजनीतिज्ञ थे। हमारे प्रदेश की राजनीति के अग्रणी महारथियों में से वह थे और उन्होंने यहां की राजनीति को और सार्वजनिक जीवन को हर अंग और क्षेत्र में प्रभावित किया था। मेरा उनका निकट सम्पर्क तो बहुत नहीं रह सका, कारण कि उनकी राजनीति और हमारी राजनीति की शुरुआत दो क्षेत्रों से हुई थी, लेकिन जब कभी यदा कदा उनके दर्शन का अवसर मुझे मिला उनके जीवन ने मुझे कुछ न कुछ प्रेरणा ही दी। मुझे वह दिन याद है जब पहली बार इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के विद्यार्थी के रूप में आदरणीय अलगूराय शास्त्री के साथ मैं उनके घर गया था। सादा जीवन, सरल स्वभाव, सादा भोजन छाजन, सारे परिवार में सादगी का एक

साम्राज्य छाया हुआ था। उस तपोभूत जीवन ने मुझे बहुत प्रभावित किया था। उसके बाद वह दिन भी मुझे याद है जब वह रुग्ण शैय्या पर पड़े हुये थे, तब भी टंडन जी के दर्शन का सौभाग्य ही कहूंगा, मुझे प्राप्त हुआ था। मैंने उनको देखा, मसनद के सहारे अधलेटे हुये और पैरों पर कोई कड़ी चीज रखकर चिट्ठियां लिख रहे थे। मैं कमरे में घुसा, मुझे आश्चर्य हुआ कि एक आदमी जो क्षण क्षण मृत्यु के मुख की ओर जा रहा है, जिसका पैर कब्र की तरफ है, वह फिर भी बैठा हुआ पत्र लिख रहा है। मुझे ऐसा खयाल हुआ कि शायद पत्र कोई जरूरी होगा, लेकिन जब टेबिल पर आंख गयी तो देखा कि कम से कम एक दर्जन पत्रों का ढेर लगा हुआ था। अब मैं उनको सलाह दूं यह दुःसाहस मेरे में कहां? लेकिन इतना मैंने कहा कि बाबू जी, यह आप अपने साथ अत्याचार कर रहे हैं। क्या डाक्टरों की राय इसके लिये है? उन्होंने कहा कि "बच्चा—मुझे वह अमृतमय शब्द अमररूप से याद हैं और रहेंगे—अगर कर्त्तव्य नहीं करना है तो जीवन किस काम का। जब तक जीवन है तब तक करना ही होगा।" मेरी आंखों में आंसू आ गये और मेरा मस्तक श्रद्धा से झुक गया। मैंने उनके चरणों का स्पर्श किया और चला गया। यह वे विभूतियां रही हैं राष्ट्रीय आन्दोलन की कि जिनके सार्वजनिक जीवन से, जिनके एक एक काम से हजारों आदमियों को प्रेरणा मिली और जिनके एक एक काम ने हजारों आदमियों को प्रभावित किया। किन-किन को प्रभावित किया और कहां कहां प्रभावित किया इसका पता उनको अपने जीवन में नहीं रहा और न अन्त तक रह सका।

विधान सभा के अध्यक्ष की हैसियत से, जिस स्थान पर आज आप विराजमान हैं, उस पर रहकर जिस परम्परा और आदर्श की उन्होंने रचना की वह हम सब के लिये अनुकरणीय है। एक राष्ट्रीय संगठन और दलीय राजनीति के भागी होकर दलगत भावना से ऊपर होना, यह दोनों बातें परस्पर विरोधी दिखाई पड़ती हैं आज के जमाने में, लेकिन यह नमूना उन्होंने उपस्थित किया और वह भी उन दिनों से जब राष्ट्रीय धारा एक तरफ चल रही थी और लीग की धारा दूसरी तरफ चल रही थी। लीग की राजनीति का केन्द्रबिन्दु और उसकी धारा घृणा पर आधारित थी। राष्ट्रीय आन्दोलन की विचारधारा के लिये यह एक विध्वंसक रूप दिखाई देता था, तो उन दिनों सदन में आपस में सामंजस्य लाना और निष्पक्ष रहना कितना कठिन कार्य था उसकी कल्पना करने से ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। हम अपने दिलों को टटोलें तो हममें नहीं दिखाई पड़ता है—मुझमें तो नहीं है—और यहां पर किसी में दिखाई नहीं पड़ता है कि उस वातावरण और माहौल में निष्पक्षता कायम रख सके।

मान्यवर, सही माने में हिन्दी साहित्य सम्मेलन और उसके उचित प्रचार के वह देश में प्राण रहे। हिन्दी साहित्य सम्मेलन की, पारस्परिक फूट से वह अन्त तक दुखी रहे। उनके निकट सम्पर्क में रहने वाले जानते हैं सरकार को सम्मेलन के आन्तरिक सामलों में हस्तक्षेप करना पड़ा। यह उनके लिये कोई प्रिय वस्तु नहीं थी, लेकिन सरकार को करना पड़ा, जरूरत ऐसी आ पड़ी। पार्टी के अन्दर अपने विचारों के लिये महत्तम बलिदान उन्होंने किया। मैक्सिमम सैक्रीफाइस उन्होंने की। एक पार्टी एक तरफ थी उसमें बड़े-बड़े नेता थे। उनके जमाने के समकक्ष लोग भी थे। उन्होंने विचार मतभेद में अवसरवादिता को अपने पास फटकने भी नहीं दिया। इसलिये उनको बलिदान करना पड़ा। जहां तक मैं राष्ट्रीय राजनीतिक क्षेत्र के रूप को समझ सकता हूं उसके आधार पर इतना अवश्य कह सकता हूं कि बापू जी भारत के अग्रणी नेताओं के प्रिय पात्र कभी नहीं बन सके। इसका मूल्य उनको चुकाना पड़ा। इसी प्रकार वे अपने विचारों के लिये बलि चढ़ गये जब टंडन जी को कांग्रेस संस्था की सब से बड़ी गद्दी को छोड़ना पड़ा। वह राजनीतिक टक्कर थी। जैसा स्वतंत्र पर्टी के नेता ने कहा नेहरू-टंडन टक्कर के रूप में वह सही बात है। वह देश की राजनीति का मोड़ था। मैं विस्तार में नहीं जाऊंगा और न विस्तार में उस विवाद में जाना उचित ही है, लेकिन इतना मैं जरूर कहूंगा कि अवसरवादिता को वह जरा भी छू देते तो समन्वय हो सकता था। बड़े-बड़े नेताओं से उनका गहरा मतभेद रहा। समकक्ष से और अपने से बड़ों से भी, लेकिन कटुता समकक्ष से या अपने से छोटों से कभी उन्होंने आने नहीं दी। यह अनुकरणीय है हम सब के लिये। हम सब पार्टी वाले सोचें।

[श्री झारखंडेराय]

इस जनतंत्र में और प्रजातन्त्र प्रणाली में पार्टियों में टक्कर भी हैं । अपने विचारों पर दृढ़ रह कर भी इस भावना का निर्वाह करना कि कटुता न आये, आसान कार्य नहीं है। किन किन गुणों का वर्णन किया जाय, मैं तो उन के निकट सम्पर्क में नहीं रहा, लेकिन जो थोड़ा अनुभव किया है वह सब आज याद आ रहा है । मान्यवर, राजनीति वह चीज है कि जिसमें आदमी अन्त तक चिपटा रहता है । बड़ी ममता उसके प्रति रहती है, क्योंकि उसमें सत्ता, पावर रहती है, लेकिन टंडन जी ने जब महसूस किया कि उनका शरीर, उनका मस्तिष्क और उनकी राजनीति अब इस योग्य और सामयिक नहीं है तो उन्होंने राजनीति से वानप्रस्थ ही ले लिया । मैं समझता हूं कि यह बात हमारे बहुत से लोगों के लिये अनुकरणीय होनी चाहिये । प्रदेश में किसानों के वर्ग संगठन के लिये भी वह चिन्तित थे । और प्रदेश में सर्वप्रथम वर्ग किसान संगठन स्थापित करने में उनका प्रमुख हाथ था । "किसान संघ" उस संस्था का नाम था, लेकिन जब आल इंडिया किसान सभा का संगठन स्वामी सहजानन्द सरस्वती के नेतृत्व में हुआ तो एक सप्ताह के भीतर ही सारे सूबे की सभायें एवं स्वतंत्र प्रदेश किसान संघ उस के अंग के रूप में एकाकार हो गयीं । मुझे याद है, उस समय टंडन जी के दाहिने हाथ के रूप में गौतम जी, जो इस समय सदन के सदस्य नहीं हैं, काम कर रहे थे । टंडन जी तथा गौतम जी ने जो काम उस समय इलाहाबाद में किया, उसने उस समय हम लोगों के छात्रजीवन को और क्रान्तिकारी जीवन की शुरुआत में, हम लोगों को प्रभावित किया था । इलाहाबाद के किसानों में, खासकर हंडिया और दोआबा के गांवों में जाना, वहां मीटिंग करना, उन्हें राष्ट्रीय आंदोलन से अवगत कराना, उनमें वर्गीय भावना का प्रचार करना, आदि कठिन कार्य उन्होंने किये । सर्वेन्ट्स आफ पिपुल्स सोसायटी के वह जीवन सदस्य तथा अंतिम क्षण तक संरक्षक थे । मुझे वह दिन भी याद है कि जब १९४२ के अगस्त विद्रोह के बाद कांग्रेस जन जेल से छूटने शुरू हो गये थे और चारों ओर बिखरे पड़े थे, मायूस, पस्त हिम्मत थे, और जेल से महात्मा जी के बयानों से एक विभ्रम देश में फैला हुआ था, उस स्थिति में कांग्रेस जनों का संगठन करना एक दूसरे नाम से, ताकि कानून के पंजे से बचे रहें, यह उन्हीं का काम था और जब कांग्रेस पर से बंधन हटा तो वही चीज कांग्रेस संगठन के रूप में खड़ी हो गयी । तो संकट के समय में टंडन जी ने जिस सब्र और दृढ़ता का परिचय दिया वह सदा के लिये अनुकरणीय रहेगा ।

मान्यवर, उनके बारे में क्या क्या कहा जाय । हम सब उनके परिवार के हैं । अपने परिवार के प्रति क्या समवेदना और क्या हमदर्दी, लेकिन जैसा तरीका है, जैसी लोक रीति है, मैं यही कहूंगा आपके द्वारा कि आप मेरी और कम्युनिस्ट पार्टी के सभी सदस्यों की हार्दिक श्रद्धांजलि उनके चरणों में उनके परिवार तक भेजने की कृपा करें ।

जहां तक डाक्टर विधानचन्द्र राय का संबंध है, उनको मैं आधुनिक बंगाल का यूनिफाइड बिल्डर समझता हूं । बंगाल के दो टुकड़े हो गये थे, पंजाब के भी हो गये थे, लेकिन पंजाब की सी गति बंगाल की नहीं हुई । स्वर्गीय श्री जे० एन० सेन गुप्ता, नेता जी सुभाष बोस के निधन के बाद डाक्टर राय आदि के कारण ही नहीं हुई । अन्यथा बंगाल की भी वही गति हो सकती थी जो पंजाब की हुई । लाला जी की हत्या में उसे हत्या ही कहूंगा सांडर्स के जरिये—के बाद । वहां की राजनीति लाला लाजपत राय के बाद कभी एक सूत्री नहीं हो सकी और वह दुखद इतिहास की परम्परा आज भी चली जा रही है । वह दिन बंगाल को नहीं देखना पड़ा । यह बहुत हद तक डाक्टर विधानचन्द्र राय की ही करामात थी । वह एक एमीनेंट डाक्टर थे, यह तो हम जानते ही हैं, लेकिन वह एक योग्य स्टेट्समैन और प्रशासक भी साबित हुए । इस की कल्पना हमारे जैसे सावधान लोगों को नहीं हो सकती थी । इसकी अनुभूति देश की महान् विभूतियों को या उनके निकटतम सम्पर्क में रहने वालों को ही शायद हो सकती थी । मैं ऐसा समझता हूं कि साधारण लोगों को इस का परिज्ञान बिलकुल नहीं था ।

बंगाल की राजनीति में जो स्थान रिक्त हुआ है वह अब जल्दी भरा जायगा इधर निकट भविष्य में ऐसा विश्वास नहीं होता । एक खूबी उनकी और है और हमारे देश के प्रशासकों को

इधर ध्यान देना होगा। बंगाल वह सूबा है जहां लेफ्टिस्ट मूवमेंट (वाम पक्षी) आंदोलन बहुत मजबूत है। इस बात को सब मानते हैं, विरोधी भी मानते हैं और अन्य पक्षीय लोग भी मानते हैं। उस वाम पक्षी आंदोलन के साथ समन्वय और समझौते का रास्ता निकालने का जो प्रयत्न विधानचन्द्र राय जी ने समय-समय पर किया, मैं समझता हूं कि वह एक नमूना है, एक उदाहरण है, हमारे देश के प्रशासकों के लिये। कहना पड़ेगा कि जब प्रजातांत्रिक प्रणाली है, दलीय राजनीति है तो विरोधी पक्ष के लोग भी बढ़ेंगे और सरकारी पक्ष और विरोधी पक्ष का अंतर कम होगा और होना भी चाहिये, तो फिर यही दृष्टिकोण जो विधान चन्द्र राय जी ने बंगाल में रखा आंदोलनों के प्रति, या वामपक्षीय, विरोधी पक्ष के लोगों की मांगों के प्रति, वह एक नमूना हमारे देश के प्रशासकों को कायम रखना चाहिये।

इन शब्दों के साथ मैं डाक्टर विधान चन्द्र राय जी हमारे देश की एक महान् विभूति थे—को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। इस युग में जो बिखराव की प्रवृत्तियां बढ़ती जा रही हैं जैसे बंगाल के बगल में असम में अजीब-अजीब मांगें हैं, मद्रास में भी अजीब-अजीब बातें हैं, पंजाब में भी अजीबअजीब हालतें हैं, नागालैंड में भी अजीब हालत है. एक बिखराव की स्थिति है, जातिवाद, सम्प्रदायवाद, प्रान्तवाद और बिखराव के नाना प्रकार के वीभत्सरूप, हमारे देश में जगह-जगह भर रहे हैं, फैल रहे हैं, उनका प्रसार हो रहा है और संगठन हो रहा है, ऐसे समय में इन महारथियों की हमारे देश को अत्यन्त आवश्यकता थी, परन्तु काल के सामने हम सब नतमस्तक हैं।

इन शब्दों के साथ डाक्टर विधानचन्द्र राय के निकट संबंधियों के प्रति मैं अपनी और कम्युनिस्ट पार्टी के अन्य सदस्यों की हमदर्दी जाहिर करता हूं, श्रद्धा के फूल चढ़ाता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि हमारी यह भावनाएं, विनीत भावनाएं, उन दोनों महान् विभूतियों के परिवारों तक पहुंचाने का कष्ट करें।

*श्री भगवानसहाय (जिला शाहजहांपुर)—अध्यक्ष महोदय, आज इस देश की दो महान् विभूतियां हमेशा के लिये इस संसार को छोड़कर चली गईं। हमारे देश और खास-तौर से हमारे राज्य को आज महामना पूज्य टंडन जी के निधन से बहुत ही नुकसान हुआ है। श्रीमन्, यह नुकसान ऐसा है जो बहुत दिनों तक पूरा नहीं हो सकेगा। महामना पूज्य टंडन जी के बारे में और डाक्टर राय के बारे में विभिन्न दलों के नेताओं ने बहुत कुछ प्रकाश डाला है। टंडन जी हमारे प्रांत के और हमारे देश के एक प्रमुख नेता थे। उनके जीवन से हम को बहुत प्रोत्साहन और रोशनी मिलती है और यह रोशनी उनकी मृत्यु से समाप्त नहीं होती बल्कि बहुत दिनों तक मुसीबतों से, परेशानियों से, अन्धकार में भूले हुए और भटके हुए राजनीतिज्ञों को, विद्यार्थियों को, नागरिकों को उनके जीवन से बराबर अपनी कठिनाइयों को सफलता के साथ पूरा करने में यह रोशनी उनकी मदद करती रहेगी।

श्रीमन्, टंडन जी को हम जिस रूप में भी देखें, एक विद्यार्थी के रूप में, एक वकील के रूप में और थोड़ा बहुत म्युनिसिपैलिटी के चेयरमैन के रूप में या एक राजनीतिज्ञ के रूप में, हम उनको सर्वश्रेष्ठ ही पाते हैं और उनके जीवन के हर पहलू से हमें रोशनी मिलती है। श्री टंडन जी बहुत ही उसूलों के व्यक्ति थे। अध्यक्ष पद पर अनेक अनेक विवादग्रस्त समस्याओं का जिस तरह से और जिस निष्पक्षता के साथ उन्होंने हल किया वह सराहनीय है। राजनीति से अलग न होते हुये भी उन्होंने जिस निष्पक्षता के साथ कार्य किया अध्यक्ष पद पर, वह सदा ही सराहनीय है। जिस जिम्मेदारी को उन्होंने जिस तरह से पूरा किया उससे देश के सभी उन पदों पर कार्य करने वाले व्यक्तियों को प्रेरणा मिलती रहेगी। हम सब को उनसे रोशनी मिलेगी और संकट के समय पथ-प्रदर्शन भी मिलेगा।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री भगवानसहाय]

अध्यक्ष महोदय, टंडन जी से मैं दो वर्ष पूर्व जब वे मरीज थे, तब मिला था। मरीज के रूप में जब मैंने उनको देखा तो मैं बहुत प्रभावित हुआ। उनको जो डाक्टर देखने गये, मैंने देखा कि उनसे उन्होंने अपना हाल नहीं कहा बल्कि डाक्टर के परिवार के बारे में, उनके बच्चों के बारे में, बातचीत को आधा घंटा जलपान आदि कराने में बीत गया। फिर भी उन्होंने अपनी बीमारी के बारे में डाक्टर से कुछ नहीं कहा। फिर कहीं डाक्टर के बहुत कहने पर उन्होंने अपनी बीमारी के बारे में डाक्टर को बताया। तो मैं समझता हूं कि मरीज की हालत में भी वे एक आदर्श मरीज थे।

राष्ट्रभाषा के लिये इस देश की जो उन्होंने सेवा की है उसके बारे में जितना भी कहा जाय कम है। जैसा कि हमारे अन्य साथियों ने कहा है, हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने में ही वे देश की तरक्की समझते थे। उनका कहना था कि देश को अगर तरक्की करना है, आगे बढ़ना है, तो हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाना जरूरी है। उसके लिये उन्होंने परेशानियां उठा कर, कभी-कभी गलत-फहमी के शिकार भी होकर, उस काम को पूरा करने के लिये सराहनीय कार्य किया। अफसोस इस बात का है कि वे इस कार्य में अधिक कामयाबी नहीं देख पाये।

अध्यक्ष महोदय, मैं एक बात और कहना चाहता हूं। टंडन जी उन महान् व्यक्तियों में से थे जिन्होंने कभी अपने परिवार के लिये अपने असर को नहीं अपनाया। मेरी निजी जानकारी है कि एक बार एक जगह पर उनके परिवार के एक सदस्य के लिये कुछ फेवर किया जाने वाला था। जब टंडन जी को इस बात का पता चला कि उनके कारण कुछ फेवर किया जा रहा है तब उसको उन्होंने वहीं पर रोका।

अध्यक्ष महोदय, डाक्टर बी० सी० राय हमारे बीच से चले गये, यह हिन्दुस्तान के लिये और दुनिया के लिये बहुत बड़ी बात है। वह एक कुशल राजनीतिज्ञ थे और बंगाल की राजनीतिक समस्या का उन्होंने अच्छी तरह से नेतृत्व किया। इसके अलावा अपने व्यक्तिगत जीवन में वह उतने ही सफल डाक्टर भी थे। एक छोटी सी बात कहूं कि जब विलायत में पढ़ने के लिये गये थे और वहां मेडिकल कालेज में ऐडमीशन चाहते थे तो वहां के प्रिंसिपल ने कहा कि हमारा तजुर्बा बंगाल के लड़कों के बारे में बहुत खराब है, वह पढ़ते-लिखते नहीं हैं, इस तरह से उनको ऐडमीशन लेने में मुसीबत हुई। लेकिन जब किसी तरह से ऐडमीशन मिल गया और अच्छी तरह से सफल होकर डाक्टर बनकर वहां से निकलने लगे तो उन्होंने कहा कि डाक्टर राय, इस कालेज में तुमको ऐडमीशन देने में हमें परेशानी होती थी और नहीं देना चाहते थे, लेकिन आज से जिस लड़के के लिये तुम लिख कर भेज दोगे उसको बिला रोक-टोक, बिला इंक्वायरी किये हुए यहां से वजीफा मिलेगा। यह वह जमाना था जब कलकत्ते में विलायती डाक्टरों की मोनोपोली थी। उन्होंने और उनके एक साथी ने मिल कर उस मोनोपोली को बिलकुल तोड़ दिया। पहले समझा जाता था कि हिन्दुस्तानी डाक्टर काबिल नहीं होते हैं, उन्होंने उस भावना को पूरे तरीके से तोड़ दिया। वह राजनीतिक जीवन में न भी होते तब भी वह सफल डाक्टर होते जितने कि वह अपने राजनीतिक जीवन में सफल हुए।

इन शब्दों के साथ मैं आपके द्वारा अपनी ओर से और अपने दल की ओर से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और प्रार्थना करता हूं कि आप हमारी भावनाओं को उनके परिवारों तक पहुंचा दें।

श्री अध्यक्ष—दो महान् विभूतियों से आज हमारा देश और प्रदेश वंचित हुआ है। उनके संबंध में जो श्रद्धांजलियां इस आदरणीय सदन द्वारा समर्पित हुई हैं उन सभी से मैं अपने आप को संबद्ध करता हूं। माननीय टंडन जी का भौतिक जीवन क्या था, ऐसा प्रतीत होता है कि वह एक महान व्रतधारी की साधना थी। व्यक्तिगत सारी आशाएं, आकांक्षाएं,

महत्वाकांक्षाएं सभी उनके जीवन से लुप्त हो चुकी थीं। त्याग, तपस्या, सत्य और व्रत के उत्थान में उनका जीवन रम गया था।

माननीय गेंदासिंह ने बहुत सी बातें कहीं। एक तरफ ऊंचा पद और लाभप्रद नौकरियां मिलती हैं, उसका परित्याग होता है और दूसरी तरफ सर्वेंट आफ पीपुल सोसाइटी के सदस्य वह बनते हैं। एक तरफ जन और देश की समस्त सेवाओं के क्षेत्रों को वह अनुप्राणित करते हैं और दूसरी तरफ हंसते-हंसते कांग्रेस के अध्यक्ष पद से इस्तीफा देते हैं। एक तरफ जेल की यातनाएं और आर्थिक कष्टों को ओढ़ते हैं और दूसरी तरफ राज्यपाल का सिंहासन प्रस्तुत होता है, उससे मुंह मोड़ लेते हैं। यह त्याग और तपस्या है। दृढ़ता ऐसी कि जो कह दिया सो कह दिया। जो प्रण कर लिया वह प्रण कर लिया और जिस रास्ते चल दिये तो चल दिये, फिर मुड़ के नहीं देखा, फिर चाहे कोई कुछ क्यों न कहे। भारतीय संस्कृति के प्रति प्रेम उन्होंने साबित कर दिया और प्रमाणित कर दिया कि—

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।

अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥

कवि ने तो यह कहा है। आप कह सकते हैं—

व्रतपथः न प्रविचलति पुरुषोत्तमः।

रघुकुल रीति यही थी कि राम महान् व्रत परायण पुरुषोत्तम थे। तो पुरुषोत्तम का दास पुरुषोत्तम की रीति को कलुषित नहीं कर सकता। यह पुरुषोत्तमदास टंडन हैं।

इस अध्यक्ष पद को २५ वर्ष पूर्व, ३१ जुलाई, १९३७ को उन्होंने ग्रहण किया। १३ वर्ष पर्यन्त, १० अगस्त, १९५० तक वे अध्यक्ष रहे और जब जब सदन की बैठक हुई वह उन स्वच्छ और श्रेष्ठ परम्पराओं और मर्यादाओं को ढालते रहे जो आज मेरे लिये, इस सदन के लिये और कदाचित् सारी विधायिनी सभाओं के लिये एक ज्योति-स्तम्भ बन गईं। जैसा मैंने कहा, वह तपस्वी और त्यागी न होते अगर, भारतीय संस्कृति जो कहती है कि शोक और हर्ष सम हो, "शोकहर्षौ जहाति स धीरः" जिसके लिए शोक और हर्ष समरस हों वह धीर है। उनके लिये शोक और हर्ष बराबर था तभी वह इस सदन में कह सके कि अगर विरोधी दल मुझमें विश्वास न करे तो उसी दिन मैं इस आसन का परित्याग कर दूंगा। यह निर्ममत्व और निर्भीकता जिसम होती है वह धीर पुरुष हो जाता है।

हिन्दी तो उनकी प्राण थी, स्वासोच्छ्वास थी जिस पर सब कुछ न्योछावर था, उनका जीवन, उनकी आकांक्षाएं और उनका परिवार न्योछावर था। उन्हीं का प्रताप है कि आज हमारे देश, प्रदेश और बहुत से प्रदेशों में हिन्दी मुखरित हुई है और हमारा विश्वास है कि आज जहां कुछ अन्य प्रदेशों में हिन्दी के प्रति अनमनापन सा है, उनके प्रताप से प्रभावित होकर वहां हिन्दी को वह राष्ट्रीय पद मिलगा जो कि हमारे संविधान में दिया गया है। मेरे पास महाराष्ट्र से पेन म्युनिसिपल बोर्ड से जो शोक प्रस्ताव व समवेदना का पत्र आया है उसमें उन्होंने कहा है कि हमें गर्व है कि राजर्षि टंडन जी हिन्दी के पुरस्कर्ता हैं। इससे मेरा विश्वास होता है कि एक दिन वह आयेगा जब कि हम हिन्दी को अपने स्थान पर प्रतिष्ठित देखेंगे।

माननीय विधानचन्द्र राय के संबंध में बहुत सी बातें यहां कही गयी हैं। मुझे उनके जीवन में जो सबसे महत्व की बात दिखलायी देती है वह यह है कि उत्तर प्रदेश जो भारतवर्ष का सबसे बड़ा प्रान्त है, उसके राज्यपाल के पद पर उनकी नियुक्ति होती है, लेकिन वे यह अनु-

[श्री अध्यक्ष]

भव करके कि राज्यपाल के पद को प्राप्त करके, आज तक जो कंधे से कंधा भिड़ा कर अपने देश की तमाम जनता के साथ कार्य किया है, उस सेवा से मैं वंचित हो जाऊंगा, उस पद को अस्वीकार कर दिया। आज हम उन दो महान विभूतियों की शोक स्मृति में श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं जिन्होंने राज्यपाल के पद को इसलिये ठुकराया ताकि वे जनता की सेवा करें। मैं अपनी तरफ से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि दो मिनट खड़े होकर अपनी अपनी श्रद्धांजलि दें।

(सब सदस्य अपने-अपने स्थान पर दो मिनट के लिए खड़े हुए।)

मैं समवेदना का पत्र दोनों परिवारों को भेज दूंगा। आज की कार्यवाही समाप्त होती है। कल फिर ११ बजे बैठक होगी।

(इसके बाद सदन १२ बजकर ५९ मिनट पर अगले दिन के ११ बजे तक के लिये स्थगित हो गया।)

देवकीनन्दन मित्थल,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश।

लखनऊ :
३० जुलाई, १९६२।

विधान सभा सचिवालय

पी० एस० यू० पी०—ए० पी०—११० एल० ए०—१९६२—८४५।